विषय सूची

1. नशा क्या है ? 1
2. नशे कैसे लगते हैं ? 4
   (i) माता-पिता की संगत से 4
   (ii) मैरिज़ पैलस तथा पार्टी हॉल में 4
   (iii) अज्ञानता के कारण 5
   (iv) अतिथि सत्कार करते करवाते 5
   (v) नशाखोरों की संगत तथा नशों की महिमा सुनने पर 6
   (vi) थकावट दूर करने के बहाने 7
   (vii) मालिकों की ओर से मज़दूरों से अधिक कार्य लेने के लिए नशों का प्रयोग 7
   (viii) बेरोज़गारी के कारण नशे 8
   (ix) चुनावों में नशे की लत 8
   (x) सोसायटी के प्रभाववश नशों का लगना 9
   (xi) पारिवारिक झगड़े 10
   (xii) आकर्षित प्रचार द्वारा नशों का लगना 10
   (xiii) ध्यान लगाने के आवरण में नशे का प्रयोग 11
   (xiv) समाज मे नशाखोरी की आदत में फिल्मी अभिनेताओं का योगदान 12
3. नशा राष्ट्रों को तबाह करने का साधन 13
4. नवयौवन की आधुनिक स्थिति 15
5. धार्मिक मण्डल में नशों की मनाही 17
6. एक सत्य घटना 26
7. नशे की हानियां 27
   (i) नशे नपुंसकता तथा बांझपर का कारण बनते हैं 27
   (ii) नशे शरीर का नाश करते हैं 28
   (iii) नशे धन की बर्बादी करते हैं 30
   (iv) नशे समाज में मान-सम्मान को कम करते हैं 31
   (v) नशे रिश्ते-नाते करने में बड़ी रुकावट बनते हैं 33
   (vi) नशे मनुष्य को अपना गुलाम बना लेते हैं 34
   (vii) नशे थाने, कचहरियों तथा जेलों की रौनक बढ़ाते हैं 35
   (viii) नशे दुर्घटनाओं का मुख्य कारण बनते हैं 36
   (ix) नशे, शुभ कर्मों का नाश करते हैं तथा परलोक को बिगाड़ते हैं 41
8. कर्त्तव्यों से लापरवाही 42
   (i) माता-पिता की लापरवाही 42
   (ii) अध्यापकों की भूमिका तथा प्रचार की कमी 43
   (iii) धार्मिक स्थान तथा धार्मिक रुचि का त्याग 44
   (iv) प्रचार की कमी 46
   (v) सरकार की ओर से नशों के प्रति लापरवाही 48
9. अब क्या किया जाये ? 49
10. गुरमति में सुखी और सुविधापूर्ण जीवन जीने का ढंग 54
   (i) किरत करो 54
   (ii) वंड छको 56
   (iii) नाम जपो 58

प्रचार के ढंगों से परिवर्तन की आवश्यकता

आज हमें उन नवयुवकों तक पहुँचने की अत्यावश्यकता है, जो किसी भी कारणवश अपनी विरासत और सभ्याचार से टूट कर दिशाहीन होकर मनमर्जी का जीवन व्यतीत करते हुए भ्रम में फँसे, भटक रहे हैं। इन जड़ों तक डूबे नवयुवकों को वापिस लौटाने के लिए हमें प्रचार के ढंगों में परिवर्तन लाने की जरूरत है। प्रचार में प्यार को शामिल करने की आवश्यकता है। पतित नवयुवकों को शब्दों के तीखे तीर मारने की अपेक्षा प्यार से गले से लगाकर उनसे अपनत्व को प्रकटाया करके, उनकी पीठ पर प्यार से थपकियाँ देकर उनकी भलाई के लिए गुरु का वास्ता देकर मार्ग दिखाने की जरूरत है। जैसे कि भाई वीर सिंह जी ने 1913 ई. की सिक्ख ऐजूकेशन कानफ्रंस में प्रो. पूर्ण सिंह को प्यार से गले लगाकर उनको पुनः गुरु-सिक्खी की मुख्यधारा में शामिल करने में सफलता प्राप्त की थी।

घटना इस प्रकार घटी, प्रो. पूर्ण सिंह जो बचपन से अत्यंत नेक गुरुमति संस्कारों को धारण किये हुए थे। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप जी प्रायोगिक रसायन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान देश चले गये, जहाँ आप स्वामी रामतीर्थ जी के विचारों से प्रभावित होकर वेदांती बन गये। सिक्ख कौम ने प्रोफेसर से नाता तोड़ लिया। समय आया जब चीफ खालसा दीवान ने स्यालकोट में 1913 ई. को सिक्ख शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में वक्ताओं का चुनाव करते समय प्रोफैसर साहिब का नाम भी सामने आया। धर्म को पीठ दिखाने के कारण काफी समय पक्षधर और विपक्षियों में विचार-चर्चा चली। आखिर में यह निर्णय हुआ कि पूर्ण सिंह विचारवान् विद्वान् मनुष्य है, स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर कुमार्गी हो गया है। गुरु सिखी संस्कार अभी भी उसके अन्दर सम्माहित हैं। हमें पूर्ण सिंह को बुला कर उसको अपने विचार प्रकट करने का अवसर अवश्य देना चाहिए। सहमति होने के पश्चात् पूर्ण सिंह को सम्मेलन में भाषण देने का निमंत्रण पत्र भेज दिया गया।

नशा क्या है ?

महान कोश के अनुसार नशे का अभिप्राय, अमल, मादक द्रव्य, दिमाग को असन्तुलित करने वाला पदार्थ है। नशीले पदार्थों के प्रयोग से हुई नीम बेहोशी की स्थिति को असन्तुलित (कोभ[१]) अवस्था कहते हैं।

असन्तुलित (कोभ) अवस्था दिमाग की एक ऐसी स्थिति है जो मनुष्य का वास्तविकता से रिश्ता तोड़ देती है और मनुष्य को मदहोशी की अवस्था में ले जाती है। इस स्थिति में न तो मनुष्य सही सोच सकता है और न ही सही कार्य कर सकता है क्योंकि मनुष्य की बुद्धि का ठीक सोचने की शक्ति से रिश्ता टूटा हुआ होता है। यदि मनुष्य नशीले पदार्थ अधिक सेवन कर ले तो यह कोभ अवस्था ही ''पागलपन'' बन जाती है। ऐसी अवस्था में जहां मनुष्य को बुरे अच्छे की परख नहीं रहती वहीं उसको अपने और पराये की समझ भी समाप्त हो जाती है। मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। भ्रष्ट बुद्धि अधीन मनुष्य लोक परलोक में अपमानित होकर धक्के खाने के कर्म कर बैठता है और अन्त में पूरी आयु पश्चाताप तथा आहों में व्यतीत करता यहां से चला जाता है। नशे के अधीन बनी ऐसी पागलपन की स्थिति में नशाखोर मनुष्य को न सरकार का डर, न ही समाज की शर्म तथा न ही परमात्मा का भय रहता है। वह पागलपन की अवस्था में मन में जो आया करता है, अपना लोक-परलोक बिगाड़ लेता है। नशाखोर मनुष्य की बनी दशा के विषय में श्री गुरु अमरदास जी ने यह फुरमान किया है-

माणसु भरिआ आणिआ माणसु मरिआ आइ॥
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमह धके खाइ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पार वसाइ॥
नानक नदरी सचु मदु पाईए सतिगुरु मिलै जिस आइ॥

सलोकु म: ३ पृष्ठ ५५४

१. कोभ-खुमारी की अवस्था, जिसमें व्यक्ति को सुध-वुध नहीं रहती।

नशे के कारण बनी मदहोशी की अवस्था में मनुष्य अपनी ही काल्पनिक दुनिया बसा लेता है, जो बिल्कुल हवाई किलों की भान्ति बेबुनियादी रचना होती है, इसका वास्तविकता से दूर का भी रिश्ता नहीं होता। जैसे-जैसे नशे का प्रभाव कम होता है, वैसे-वैसे मदहोशी अवस्था के कारण बनी हुई काल्पनिक दुनिया भी समाप्त होने लग जाती है और वास्तविकता मनुष्य के सामने आकर साकार होती है। उस वास्तविकता को, जिसको मनुष्य ने नशा लेकर भुलाने का प्रयत्न किया था, पुनः देखकर मनुष्य पहले से भी अधिक दुःखी और परेशान होता है, पुनः परेशानी तथा दुःख से छुटकारा पाने के लिए तथा मदहोशी की काल्पनिक रचना को प्राप्त करने के लिए मनुष्य नशे का पुनः सेवन कर लेता है। बार-बार नशा सेवन के कर्म, आदत बनकर मनुष्य के स्वभाव का अंग बन जाते हैं जो मनुष्य को हमेशा के लिए अपना गुलाम बना लेते हैं। इस नशाखोर स्वभाव की गुलामी मनुष्य का उतनी देर पीछा नहीं छोड़ती जितनी देर मनुष्य हँसते-बसते संसार से शमशान घाट में नहीं पहुँच जाता।

यदि कहीं अच्छी संगत द्वारा अथवा गुरु उपदेश को सुनकर नशाखोर मनुष्य के मन में नशे को छोड़ने के लिए कुछ संस्कार बनते भी हैं, उन अच्छे संस्कारों पर नशा सेवन करने के स्वभावी संस्कार हावी होकर, अच्छे संस्कारों को साकार नहीं होने देते। मनुष्य नशे से छुटकारा पाना चाहता हुआ भी नशे की गिरफ्त से निकल नहीं सकता। भाई गुरदास जी का पांच सौ इकानवें सवैये में प्रगटाया हुआ फुरमान नशाखोर मनुष्य पर पूरी तरह लागू होता है। आप जी का फुरमान है-

जैसे पोस्ती सुनत कहत पोस्त बुरो॥
ताकै बसि भइयो छाडयो चाहै न छूटई॥
जैसे जूआ खेल बित हार बिलखै जुआरी॥
तऊ पर जुआरन दी संगति न टूटई॥
जैसे चोर चोरी जात हिरदे सहिकत पुन॥
तजत न चोरी जउ लउ सीस ही न फूटई॥
तैसे सभ कहत सुनत माया दुखदाई॥
काहू पै न जीती परै माया जग लूटई॥

जिस प्रकार पोस्त[१] पीने वाला अमली मनुष्य, बुद्धिमान् व्यक्ति से नशे के अवगुण सुनता भी है और स्वयं भी अपने मुँह से नशे को बुरा कहता, अपने बच्चों को तथा अन्य को नशे से बचने का उपदेश भी करता है परन्तु स्वयं नशे का इतना गुलाम हो जाता है कि वह नशे को छोड़ना चाहता हुआ भी छोड़ नहीं सकता। नशाखोर व्यक्ति की स्थिति उस जुआरी जैसी हो जाती है जो जुआ खेलकर सारी सम्पत्ति हार जाता है और सम्पत्ति के हार जाने का दुःख भी अनुभव करता है और आर्थिक तंगी के कारण रोता और विलाप भी करता है परन्तु जुआ खेलने की बुरी आदत तथा जुआरियों की बुरी संगत को छोड़ भी नहीं सकता। एक अन्य उदाहरण देकर भाई साहिब फरमाते हैं कि नशाखोर व्यक्ति की स्थिति उस चोर की भान्ति बन जाती है जिसको पता भी है कि चोरी करना बुरा कर्म है। वह चोरी करने के फलस्वरूप मिलने वाले दण्ड को भी जानता है तथा हर समय डरता भी रहता है कि मेरे इस बुरे कर्म का किसी को पता न लग जाये और भय वाला जीवन व्यतीत करता है। किसी-किसी समय चोरी छोड़ देने का साहस भी करता है परन्तु चोरी करने के स्वभावी संस्कार उसको चोरी नहीं छोड़ने देते। एक दिन चोरी करने का बना स्वभाव ही चोर की मौत का कारण बन जाता है। तैसे सभी मनुष्य माया के जंजाल को दुखदायी कहते सुनते हैं परन्तु यह माया किसी ओर से जीती नहीं जाती अपितु यह सम्पूर्ण विश्व को अपने जाल में फंसाकर तिरस्कार कर प्रभु से बिछोड़ रही है।

---

१. पोस्त-एक मादक पदार्थ।

नशे कैसे लगते हैं ?

1. माता-पिता की संगत से

जो माता-पिता स्वयं नशा प्रयोग करने के अभ्यस्त हो चुके हैं और वे समय-समय अपने बच्चों के सामने नशा प्रयोग करते हैं, आमतौर पर ऐसे परिवारों के बच्चे समय मिलने पर नशों का सेवन करने लग जाते हैं। क्योंकि बच्चे में दो गुण बड़े प्रबल होते हैं। प्रथम, जो बच्चा आँखों से देखता है वही करने लग जाता है, दूसरा, जो कानों से सुनता है उस सुने हुए अच्छे तथा बुरे को जुबान से बोलकर साकार करता है। चाहे ऐसे माता-पिता, दिल से यह नहीं चाहते कि उनका बच्चा नशे का प्रयोग करने लग जाये तथा समय-समय वह अपने बच्चों को नशे का सेवन करने से वर्जित करते भी हैं तथा नशों के बुरे प्रभावों बारे बताते भी हैं। चाहे बच्चे मां-बाप के सामने खुलकर कुछ नहीं कह सकते परन्तु सूक्ष्म रूप में वे अनुभव करते हैं कि यदि नशों का सेवन करने में इतनी बुराईयां हैं तो फिर, ये (माता-पिता) क्यों प्रयोग करते हैं। कई साहसी बच्चे यह कहने की हिम्मत भी जुटा लेते हैं कि यदि नशे का सेवन हमारे लिए बुरा है तो क्या आपके लिए यह गुणकारी है ? जिसका जवाब माता-पिता के पास नहीं होता।

2. मैरिज़ पैलस तथा पार्टी हॉल में

आजकल विवाह-शादियां तथा पार्टियों के समय बच्चों को माता-पिता के साथ अथवा अकेले जब मैरिज़ पैलेस अथवा हॉल में जाने का समय मिलता है वहां भी वेटर जब बार-बार उनके आगे अलग-अलग तरह की शराब के गिलास लेकर पीने के लिए पेश करते हैं, साथियों के कहने पर अथवा अनजाने में ही स्वाद चखने के लिए उन बच्चों का मन ललचा जाता है तथा वे मुफ्त में मिल रही शराब को जैसे-तैसे एक बार पी लेते हैं, थोड़ी देर पश्चात् जब उनको कुछ सरूर सा आने लगता है तथा वे शरीर में नवीनता का अनुभव करते हैं। साथियों के साथ

मिल-जुलकर नाचने-कूदने लग जाते हैं। पिये हुए पैग का प्रभाव उतरने पर वे पुन: नशे का सेवन कर लेते हैं। इस प्रकार करते-करते अनजानेपन में बच्चे नशों की गिरफ्त में आ जाते हैं। धीरे-धीरे यह आदत पककर उनको पूरा नशेड़ी बना देती है जो भविष्य में उनके जीवन को बर्बाद करने का कारण बन जाती है। पार्टी के समय मां-बाप स्वयं खाने-पीने तथा मेल-मिलाप के कार्य में जुटे होते हैं। बच्चों में अभी दूरदर्शिता की कमी होती है इसलिए वे अपने मां-बाप की लापरवाही का लाभ उठाकर, नशे की बीमारी को लगाकर प्रसन्न होते हैं।

3. अज्ञानता के कारण

किसी भी बुरी चीज़ से मनुष्य उतनी देर ही बच सकता है, जितनी देर उस वस्तु के अवगुणों से घृणा करता तथा उस वस्तु के सेवन करने के उपरान्त निकलने वाले बुरे परिणाम से सावधान रहता है। जब कोई अज्ञानतावश अथवा लापरवाही से या जानबूझकर, उसके अवगुणों को आँखों से ओझल करके अथवा अनजान बनकर उसकी बुराई को भी प्रेम करता तथा अवगुणों को भी गुण के रूप में स्वीकार कर लेता है फिर मनुष्य कभी भी उस बुरी चीज़ के प्रयोग से अथवा बुरे काम से बच नहीं सकता।

कभी समय था, जब कोई मनुष्य बुरी संगत में रहकर शराब पी लेता था वह उतनी देर अपने बच्चों तथा बड़ों के सामने परिवार में जाने का साहस नहीं करता था जितनी देर वह पूरी तरह ठीक-ठाक नशेहीनता की अवस्था में न आ जाए, नशे वाला समय वह छिप-छिप कर व्यतीत करता था, परन्तु आज परिस्थितियां ऐसी बन गई हैं कि तीन पीढ़ियां (पिता-पुत्र तथा पोता) इकट्ठे बैठकर शराब को सोशल ड्रिंक (Social Drink) का नाम देकर पीने में गौरव समझते हैं।

4. अतिथि सत्कार करते करवाते

आजकल घरों में आये अतिथियों की खातिरदारी भी शराब पिलाये बिना अधूरी समझी जाती है। दूसरी ओर अतिथि को भी जितना मर्ज़ी अच्छा भोजन

तथा पदार्थ खिलाये-पिलाये जायें परन्तु उसकी प्रसन्नता उतनी देर नहीं होती, जितनी देर उसको शराब (शरारत का पानी) न पिलाया जाये। जब शरारत के पानी के पैग मिल गये तो अतिथि की सन्तुष्टता हो गई समझ लो क्योंकि शराब के पैग पीते ही थोड़े समय में वह खुमारी की अवस्था में चला जाता है, फिर न अच्छे खाने की आवश्यकता न सत्कार की लालसा, न अच्छी सेज़ों की तमन्ना क्योंकि वह खुमारी की अवस्था में अपनी रची नयी दुनिया में चला जाता है। इस विश्व से उसका रिश्ता भी टूट जाता है। पांच-छः घण्टे पश्चात् ही पुनः उसका सम्पर्क इस दुनिया से बनता है जब नशा टूटता है। इस प्रकार अतिथि सत्कार करते और करवाते प्रतिदिन नये नशेड़ी बन रहे हैं जिनकी संख्या बड़ी तीव्रता से बढ़ रही है।

5. नशाखोरों की संगत तथा नशों की महिमा सुनने पर

हमारे प्रतिदिन के जीवन पर संगत का बहुत प्रभाव पड़ता है। जैसे इन्सान की मनुष्य संगत करता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। बाबा कबीर जी का फ़रमान है, **"जो जैसी सन्गत मिलै सो तैसे फल खाए"** जब कहीं अज्ञानता वश अथवा विवशतापूर्ण मनुष्य नशाखोरों की संगत का शिकार हो जाता है नशेड़ी मनुष्य नशे की सरूर में नशे की उस्तुति के पुल बांधने हुए कोकीन को ''परमात्मा का उपहार'', शराब को ''हुस्नपरी'', हेरोइन जो मनुष्य का मान-सत्कार, धन-धाम सबको जड़ से उखाड़ देती है, को ''उड़नपरी'', अफीम को ''स्वर्गों की रानी'' कहकर सम्मानित करते अथवा पोस्त को ''नशों का बादशाह'' बता कर आदर देते हुए शायरी करते नशों को ''स्वर्गों के झूले'' दिलाने वाले कहकर यहां तक उस्तुति करते हैं कि :

पोस्ता दिल दोसता तेरा सोने मड़ावां बूटा॥
लख लख दी तेरी एक लोरी अरबां दा तेरा झूटा॥

जैसी पंक्तियां जब सरुर में गाते हैं तो भोले-भाले मनुष्य का दिल भी आकर्षित

हो जाता है कि शायद सचमुच ही, नशे का प्याला पीने से, लाखों करोड़ों रुपयों के स्वर्गीय झूले मिल जाते हैं। ऐसी विवेकहीन स्थिति का नशाखोर व्यक्ति लाभ लेकर सोफी मनुष्य को अपने साथ मिलाने के लिए मुफ्त में नशे का प्याला पिला देते हैं। प्याला पिया, सरूर आया, दुनिया भूली, दो-चार बार ऐसा समय बन गया, समझो एक अन्य पक्के नशेड़ी ने नशे वाली दुनिया में जन्म ले लिया।

6. थकावट दूर करने के बहाने

अपने तथा परिवार की रोज़ी-रोटी कमाने के लिए जब मनुष्य शारीरिक कार्य करते हुए थकावट अनुभव करता है, शरीर से और कार्य लेने के लिए तथा थकावट को दूर करने के लिए मनुष्य किसी नशे का अथवा गोलियों, कैप्सूलों का सहारा लेता है। नशे पर आश्रित होने के कारण मनुष्य कार्य भी अतिरिक्त कर लेता है तथा थकावट के दु:ख से भी मुक्त रहता है। काम के लालच के कारण तथा थकावट से छुटकारा पाये रखने के लिए प्रतिदिन मनुष्य नशे का आश्रय लेता-लेता एक दिन बिल्कुल ही नशे पर आश्रित हो जाता है।

7. मालिकों की ओर से मज़दूरों से अधिक कार्य लेने के लिए नशों का प्रयोग

आजकल एक अन्य बात भी देखने तथा सुनने में आई है कि ज़मींदार लोग अथवा फैक्टरी मालिक अपने मज़दूरों से अधिक कार्य लेने के लिए या तो अपने मज़दूरों अथवा कारीगरों को प्रत्यक्ष रूप में घटिया दर्जे का नशा मुफ्त में देते हैं या फिर उनको सौ कोस की चाय पिलाने के बहाने चाय में भुक्की आदि नशे डालकर पिला देते हैं। कार्य करने वाले भी सौ कोस की चाय पीकर दो सौ कोस का काम करके प्रसन्न होते हैं। उनको यह नहीं पता चलता कि मालिक उनके साथ धोखा करके उनको आजीवन काल के लिए नशे की दलदल में फैंक रहा है। इस प्रकार प्रतिदिन सौ कोस की चाय पीते-पीते थोड़े समय में ही सौ नशेड़ी की एक अन्य टीम तैयार हो जाती है।

8. बेरोज़गारी के कारण नशे

आज सारे विश्व में ही बेरोज़गारी बढ़ चुकी है। कम्प्यूटर तथा मशीनी युग होने के कारण मध्यम वर्ग के पढ़े-लिखे नौजवानों के लिए रोज़गार के अवसर बहुत कम हो गये हैं। आधुनिक नौजवान शारीरिक थकावट के कार्य करने में अपनी हीनता समझता है। ऊपरी स्तर का कार्य उसको मिलता नहीं क्योंकि उस स्तर की पढ़ाई तथा अनुभव उसके पास नहीं होता। घरेलू आवश्यकताएं ज्यों की त्यों रहती हैं। माता-पिता, परिवार, उसके हाथों की ओर झांकता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य पर मानसिक तनाव बन जाता है। ऐसे मानसिक तनाव तथा चिन्ता को दूर करने के लिए मनुष्य नशे का सहारा लेता है। कुछ घण्टों का समय तो नशे की मदहोशी में व्यतीत हो जाता है, नशे की लय कम होने के उपरान्त मनुष्य के दिमाग पर पुनः चिन्ता तथा परेशानी भारी हो जाते हैं। चिन्ता और मानसिक तनाव के बोझ को दूर करने के लिए मनुष्य पुनः नशे का सहारा लेता है समस्याओं की जड़ ज्यों की त्यों रहती है बल्कि घरेलू खर्चे के साथ-साथ नशे के खर्च का बोझ और बढ़ जाता है। आर्थिक तंगी मनुष्य का और गला दबाना आरम्भ कर देती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कोई छोटा-बड़ा रोज़गार चलाने के स्थान पर पूर्वजों की बनाई विरासत को ही चलता करना आरम्भ कर देता है। नशे की गिरफ्त में फँसे हुए मनुष्य की स्थिति ऐसी बन जाती है कि कई बार मनुष्य अमूल्य मनुष्य जन्म से ही आज़ादी प्राप्त करने के प्रति सोचना आरम्भ कर देता है तथा मानसिक तनाव वश आत्मघाती बन जाता है।

9. चुनावों में नशे की लत

हमारे देश में लोक राज्य है। लोक राज्य में अध्यक्ष बनने के लिए मत चाहिएं। मतों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक मनुष्य जहां घरों-घरों में जाकर हाथ जोड़कर प्यार से मत मांगते हैं, धन से मत खरीदते हैं, वहां मतों की प्राप्ति के लिए घर-घर नशे पहुँचाना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अधिकतर चुनावी दफ्तरों में अनाज के

लंगर के साथ-साथ बाकायदा प्रत्येक प्रकार के नशों का प्रवाह चलाया जाता है। चुनाव चाहे ग्रामीण स्तर के हों अथवा क्षेत्रीय स्तर के हों, नशों के साधन के बिना विजय असम्भव बन गई है।

जैसे समाज पंच, सरपंच, एम. एल. ए., एम. पी. चुनकर सरकार की झोली में डालते हैं वैसे चुने हुए पंच, सरपंच, एम. एल. ए. तथा एम. पी. चुनावों के दिनों में हज़ारों नये नशाखोर तैयार करके समाज को सौंप देते हैं क्योंकि जो मनुष्य चुनावों के दिनों में मुफ्त की शराब तथा प्रत्येक प्रकार का नशा खुलेआम एक महीना या अधिक समय प्रयोग कर लेता है, वह पूर्णतया नशाखोर बन जाता है। चुनाव जीतने वाले तो विजय प्राप्त करने के उपरान्त ऊंचे पदों पर विराजमान हो जाते हैं, दूसरी ओर चुनावों में तैयार हुए नशाखोर अपना नशा पूरा करने के लिए परिवार के पेट में टांग मारनी आरम्भ कर देते हैं। घरों में लड़ाई-झगड़ा बढ़ जाता है। ज़मीन-जायदाद बिकनी आरम्भ हो जाती हैं, किसके लिए ? नशा पूरा करने के लिए।

10. सोसायटी के प्रभाववश नशों का लगना

कई बार देखने में आया है कि अच्छे-अच्छे सज्जन जो स्वयं नशों के बुरे प्रभाव से परिचित हैं तथा दूसरों को भी जागृत करते हैं, स्वयं नशों की गिरफ्त में आ जाते हैं। पूछने पर उत्तर मिलता है कि मैं तो स्वयं इन नशों का विरोधी था परन्तु सोसायटी के प्रभाववश मैं नशों की बुरी आदत का गुलाम बन गया हूँ। स्मरणीय बात है कि नियम तथा सच्चाई पर दृढ़ता से पहरा देने वाले मनुष्य पर कभी भी सोसायटी का प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि सोसायटी, नियम तथा सच्चाई वाले मनुष्य का प्रभाव स्वीकार करती है तथा इज्ज़त करती है। सोसायटी का प्रभाव तभी मनुष्य पर हावी होता है जब मनुष्य अपने ईमान को हीनता भाव में ले जाकर अपने आदर्शों को त्यागकर, अपनी सोच को दूसरों की सोच के अधीन कर देता है। दबी हुई सोच का अपना नियम कोई नियम नहीं रहता। ऐसी दबी

हुई सोच का मालिक समाज की दृष्टि में भी सम्मान नहीं पाता। सम्मान सदा अपने आदर्शों पर कायम रहने वालों का ही होता है। वास्तव में सोसायटी का दबाव भी वहीं मनुष्य स्वीकार करता है, जिसका अपना जमीर कमज़ोर होता है। शक्तिशाली जमीर तथा नियम का धारणी मनुष्य चाहे अकेला ही क्यों न रह जाये सारा समाज उसका मान-सम्मान करती है। इसलिए कभी भी बुरी सोसायटी के प्रभाववश अपने नियम का त्याग नहीं करना चाहिए और न ही नशे की बुरी आदत में फँसना चाहिए।

11. पारिवारिक झगड़े

विश्व में विचरण करते हुए कई बार परिवार में पति-पत्नी का, पिता-पुत्र का झगड़ा हो जाता है। घरेलू लड़ाई-झगड़ा ही मनुष्य के मानसिक तनाव का कारण बन जाता है। मनुष्य इस झगड़े का मूल हल ढूंढने के स्थान पर अपने मानसिक तनाव से बचने के लिए नशों का आश्रय ले लेता है। नशों के सेवन करने से बुद्धि बिल्कुल ही भ्रष्ट हो जाती है। ऐसी नशीली स्थिति में मनुष्य मानसिक तनाव से बचता घर में और क्लेश बढ़ा लेता है। जैसे-जैसे क्लेश बढ़ता है, वैसे-वैसे मनुष्य का दिमागी तनाव बढ़ता है। जैसे-जैसे दिमागी तनाव बढ़ता है वैसे-वैसे मनुष्य नशों का और अधिक सेवन करता है। जैसे-जैसे मनुष्य नशे का सहारा लेता है कलह-क्लेश प्रतिदिन बढ़ते हैं। मनुष्य पारिवारिक झगड़ों का हल नशे द्वारा ढूंढते-ढूंढते एक दिन अपने तथा परिवार के लिए स्वयं मुसीबत बन जाता है तथा पक्के नशाखोरों की पंक्ति में खड़ा होकर न घर का न घाट का रहता है।

12. आकर्षित प्रचार द्वारा नशों का लगना

आज दौलत का युग चल रहा है। प्रत्येक मनुष्य धन-दौलत एकत्रित करना ही अपना जीवन का लक्ष्य बनाये बैठा है। धन-दौलत एकत्रित करने के लिए चाहे मानवता की कितनी भी हानि क्यों न हो जाये वह करने को तैयार है। इसी सोच के कारण नशों की बड़ी-बड़ी कम्पनियां, चाहे वह तम्बाकू के पैकेट तैयार

करने, चाहे शराब के नशे की बोतलों, बड़े आकर्षित लेबल लगाकर सुन्दर पैकेट बनाकर बड़े-बड़े बोर्ड चौराहों पर सजाकर, टेलीविज़न तथा समाचार-पत्रों द्वारा करोड़ों रुपये की नशे प्रति ऐसी आकर्षित इश्तहारबाज़ी करती हैं कि भोला-भाला मनुष्य नशे के जानलेवा प्रभाव को भूलकर नशे की गिरफ्त में आ फंसता है। जैसे एक अनजान मासूम बच्चा आग की सुनहरी चमक को देखकर आग में हाथ डाल बैठता है, चाहे हाथ जलने के उपरान्त बच्चा रोता तथा पछताता अवश्य है परन्तु समय हाथ से निकल चुका होता है। इसी प्रकार सुन्दर लेबल देखकर आकर्षित प्रचार देख-सुनकर मनुष्य नशा प्रचार कम्पनियों के चंगुल में फँस जाता है तथा नशेखोर बनकर सारी उम्र रोता व्यतीत करता है। स्मरणीय बात है कि आज मीडिया तथा प्रचार द्वारा मिट्टी को सोना कहकर सोने का मूल्य मिट्टी में से कमाया जा रहा है। सावधान तथा होशियार होने की आवश्यकता है ताकि गुमराह करने वाले प्रचार से हम बच सकें।

13. ध्यान लगाने के आवरण में नशे का प्रयोग

पंजाब में कुछ एक धार्मिक स्थानों पर भंग को बादाम, खसखस और दूध में रगड़ कर, भंग की शरदाई[१] का सुख निधान नाम रख कर, साधारण निर्धन और गाँव के लोगों को यह नशीली शरदाई यह कह कर पिलाई जाती है कि सुधनिधान की शरदाई पीने से मन एकाग्र हो कर प्रभु से शीघ्र जुड़ता है और मनुष्य की परमात्मा से लिव जुड़ जाती है। निर्धन और अनजान भोले लोग प्रतिदिन मुफ्त, सुखनिधान की शरदाई पीते-पीते भंग पीने के पक्के नशेड़ी बन जाते हैं। इस प्रकार नशे का धन्धा करने वालों को धर्म के पर्दे के नीचे, नए नशेड़ी ग्राहक मिल जाते है। भले ही बहुत सारे देशों और हिन्दुस्तान में भंग बेचनी या प्रयोग करनी गैर कानूनी है पर पंजाब में खेतों के किनारों, साधारण स्थान पर और घास के ऊपर भंग के पौधे बहुत अधिक मात्रा में मिलते हैं, जिस कारण समाज और

१. शरदाई-बदाम आदि को भांग में मिलाकर बनाया गया मीठा परन्तु मादक शर्बत।

सरकार इस नशे की तरफ से लाचार है तथा ढीलेपन की अवस्था में आँखे मूंद कर बैठी है। इसी कारण आज पंजाब में हजारों की गिनती में ऐसे परिवार है, जिनके सदस्य सुखनिधान (भंग) की शरदाई पीते-पीते पक्के नशेड़ी बन कर अपने परिवार और समाज के ऊपर बोझ बन गए हैं और बन रहे हैं। आज प्रत्येक समाज सुधारक को इस ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

14. समाज में नशाखोरी की आदत में फिल्मी अभिनेताओं का योगदान

प्राय: सिनेमा घरों में या टैलीविज़न पर लोगों को जो फिल्में दिखाई जाती हैं, उन में नायक (Hero) को रोबदार दिखाने के लिए या ऊंची सोसाइटी में विचरता दिखाने के लिये नायक को सिग्रेट पीते या शराब पीते हुए दिखाया जाता है। पर्दे पर ऐसे दृश्य भी दिखाये जाते हैं जिन में नायक (Hero) किसे मुश्किल में चिन्ता से ग्रस्त स्थिति में दिखाया जाता है। इस चिन्तित स्थिति में या मुश्किल से छुटकारा पाने के लिए उस को शराब पीते या सिग्रेट के कश लगाते हुए दिखा कर यह प्रभाव दिया जाता है कि नायक (Hero) को मुश्किल और चिन्ता की स्थिति में शराब या सिग्रेट ने ही छुटकारा दिलाया है। परन्तु यह सारा मदारी का तमाशा शराब और सिग्रेट बेचने वाली कम्पनियां नायकों (Heros) को बड़ी रकम दे कर करवा रही होती है ताकि उनके नशीले पदार्थों की बिक्री अत्यधिक बढ़े। इधर भोले-भाले लोग इन नायकों , जो पालतू बटेरों का रोल अदा करते है, की नकल करते करते और नायकों का प्रभाव स्वीकार करते, नशे की दलदल जा फँसते हैं। एक बार जो मनुष्य नशे की गुलामी में फँस जाता है, दोबारा नशे से मुक्त होना चाहते हुए भी इन से मुक्त नहीं हो सकता। इस लिये पहले ही सावधान हो कर और अपने लाभ और हानि को सोच कर संसार में जीवन व्यतीत करना चाहिए।

नशा राष्ट्रों को तबाह करने का साधन

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस कौम को तलवार के साथ अथवा किसी अन्य जानलेवा हथियार से तबाह न किया जा सके उसको शराब के प्याले में डुबोकर तथा अन्य ऐशो-आराम की जिल्लत में फंसाकर आसानी से ही तबाह किया जा सकता है। जिस कौम को अथवा देश को गुलाम बनाना हो उसके गले में नशों का फंदा डाल दिया जाये। नशे के गुलाम राष्ट्र, नशों की गुलामी अधीन जहां अपनी जमीर ही बेच देते हैं, धन-धाम, इज्ज़त-आबरू को भी बर्बाद कर लेते हैं वहीं अपने राष्ट्र को भी नशे के बदले में दूसरे देश तथा राष्ट्र के पास गिरवी रख देते हैं। इतिहास के पृष्ठों में उन कौमों की दास्तान आज भी पढ़ी जा सकती है जो नशे के जानलेवा हथियार द्वारा तबाह हुईं। जैसे गोरों ने अमेरिका के मूल निवासी रैड इन्डियन की वीरता तथा गौरव को शराब के ज़हरीले पानी द्वारा नष्ट किया तथा सम्पूर्ण देश अपने अधिकार में कर लिया। आज भी उनकी नयी पीढ़ी को खुली शराब तथा नशे देकर उनकी सोच-शक्ति को समाप्त किया जा रहा है। आज उनकी वीरता अजायब घरों में ही चित्रों द्वारा देखी जा सकती है या फिर यही लोग नशे की लय में सिर पर मोर के पंख टांगकर तथा नाच-कूदकर अपने हाकिम लोगों का मनोरंजन करने तक ही सीमित रह गये हैं। रैड इन्डियन्ज़ की भान्ति ही इन गोरों ने आस्ट्रेलिया के मूल निवासी ऐबोर्जिना को भी नशे के जानलेवा हथियार से मारकर, उनकी स्थिति भी अमेरिका तथा कनाडा के रैड इन्डियन जैसी ही की है।

नशे के जानलेवा हथियार के साथ ही आयरलैंड निवासियों के स्वतन्त्रता के स्वप्न को समाप्त करने के लिए ब्रिटेन की ओर से आयरलैंड में शराबखाने खोलकर खुली शराब सस्ते भाव तथा मुफ्त देकर आयरलैंड के लोगों को पागल बनाये रखा। आयरलैंड का एक भाग चाहे आज स्वतन्त्र हो चुका है परन्तु शराब का नशा आयरिश लोगों के रक्त का एक भाग बन चुका है। आयरिश लोग बहुत अधिक शराब पीने के कारण पूरे विश्व में बदनाम हो चुके हैं।

नशों के घातक हथियार द्वारा ही जापानियों ने चीन के लोगों को तथा रूस ने

मंगोलियन लोगों को अपने गुलाम बनाये रखा। आज चीन शक्तिशाली राष्ट्र बनकर सारे विश्व के सामने उभर रहा है। इसका बड़ा कारण सन् 1948 का चीनी इन्कलाब है, इस इन्कलाब के कारण जब अफीम चीन में से बाहर निकल गई तो देश ने उन्नति करनी आरम्भ कर दी।

नशों के घातक हथियार का प्रयोग करके ही गोरों ने काले लोगो को अपना गुलाम बनाये रखा तथा पशुओं की भान्ति उनसे काम लेते रहे। इसी सोचवश 1849 ई. में जब फिरंगियों ने खालसा राज्य को अनेक लोमड़ी जैसी चालें चलकर हड़प कर लिया तो सिक्ख कौम के वीर सैनिक जवानों के मन में राज्य भाग का संकल्प निकालने तथा हमेशा के लिए गुलामी का बोझ उठाये रखने के लिए शराब तथा अफीम के नशे का हथियार प्रयोग किया। इस हथियार के प्रयोग से फिरंगियों को सफलता भी मिली। जहां अधिक संख्या में सैनिक जवान शराब पीने के अभ्यस्त हो गये वहीं स्वाभिमानी निहंग सिंह जो कि अकाली फूला सिंह जी के नेतृत्व में अपने स्वाभिमान तथा खालसा राज्य की प्राप्ति के लिए हमेशा आगे होकर जूझते रहे तथा अपने प्राण न्यौच्छावर करने से भी संकोच नहीं रहते थे, उनको चुन-चुन कर मौत के घाट उतार दिया, जो शेष रहे उनको भांग, अफीम तथा पोस्त जैसे नशे लगाकर नशे के कँटिदार जंगल में धकेल दिया, जिससे वे आज तक छुटकारा नहीं पा सके।

इसी प्रकार उन्हीं रास्तों पर चलते हुए अपने ही देश के नेता अपने ही लोगों को नशे के घातक हथियार से मारने के लिए स्वयं प्रयत्नशील हैं। प्रत्येक चौराहे तथा सड़क पर शराब के ठेकों का जाल बिछाया जा रहा है। प्रत्येक दुकान तथा रेहड़ियों पर बड़े ही आकर्षित पैकेटों में तम्बाकू पैक करके, गुटका, ज़र्दा, स्कूल-कॉलेजों तथा पब्लिक स्थानों पर आवाज़ें मार-मार कर बेचा जा रहा है। यह सब कुछ किस लाचारी तथा लालचवश किया जा रहा है, यह देश के नेता ही बता सकते हैं परन्तु यह हो अवश्य रहा है, जो आने वाले समय में नयी पीढ़ी तथा समूचे देश के लिए अत्यन्त घातक अवश्य सिद्ध होगा।

नवयौवन की आधुनिक स्थिति

पंजाब, जिसको गुरु, पीरों, ऋषियों-मुनियों की पावन धरती कहकर पूजा जाता था, जिस बारे प्रो. पूरण सिंह जी ने बड़े सम्मान से कहा था, कि ''पंजाब न हिन्दू न मुस्लिम, पंजाब जीता गुरु के नाम पर'' परन्तु आज सारा सिलसिला ही बिगड़ गया है। बड़े भारी मन तथा शर्मिन्दगी से कहना पड़ता है कि आज पंजाब का नवयौवन जीता ही नशों के सहारे पर है। कौन-सा नशा है जो पंजाब का नौजवान नहीं करता ? तम्बाकू चखने वाले नशे से लेकर तीन चार सौ रुपये ग्राम वाले हेरोइन तथा स्मैक के नशों ने नौजवानों को ऐसी गलबाहीं डाल दी है कि 85% से ऊपर नौजवान नशे की गिरफ्त में आकर अपनी बहुमूल्य जवानी को तबाह कर रहे हैं। सरकार, समाज, माता-पिता तथा परिवार लाचार होकर अपनी बेबसी के कारण ठण्डी आंहें भर रहे हैं। सरकार अथवा समाज सेवी प्रयत्न भी केवल शौहरत तथा समाचार-पत्रों में अपने प्रचार (Publicity) तक ही सीमित हैं।

स्कूलों-कॉलेजों में चले जाएं, जिन बच्चों ने पढ़-लिखकर आने वाले समय में अच्छे डॉक्टर, अच्छे इंजीनियर, अच्छे गणितज्ञ, अच्छे राजनेता बनकर राष्ट्र की बागडोर संभालनी है, वे कैप्सूल, दवाईयां, हेरोइन, स्मैक, चरस, भुक्की, हशीश, गांजा आदि नशे प्रयोग करके अपने दिमाग को अर्द्ध विक्षिप्त करके अपना तथा देश-राष्ट्र का अन्त करने में मस्त हैं। नशीले टीकों को सिरिंजों द्वारा शरीर में लगाकर नशा करना साधारण आदत बन गई है।

स्कूलों-कॉलेजों के होस्टलों में तो छिपकलियां भी लुप्त हो गई हैं। पूछने पर पता चलता है कि नौजवानों ने बहुत बड़े बड़े काम किये हैं। इन्होंने छिपकलियों को मारकर इनकी राख बनाकर खा ली है। बड़ी अजीबो-गरीब स्थिति बन गई है, पढ़-सुनकर साधारण मनुष्य लज्जा अनुभव करता है। आजकल नौजवान सिर को गंजा करके उस पर बूट पालिश का लेप करके, स्नायु तंत्र को सुन्न करके, बूट पालिश में से भी नशा प्राप्त करते हैं। यहां तक कि चोट पर मलने वाली आयोडैक्स दवाई जिसमें से अत्यधिक बदबू आती है, उसमें भी नशा प्राप्त करने

के लिए, ब्रैड पर लगाकर नौजवान खा जाते हैं ताकि इस ज़हरीले पदार्थ द्वारा नशा पूरा किया जा सके। स्कूलों-कॉलेजों के बाथरूम तथा चारदीवारी के इर्द-गिर्द नशे वाली गोलियों के खाली पत्ते तथा सिरिंज मिलना साधारण सी बात हैं, जो नौजवानों के लिए आने वाले समय में संकट के घातक संकेत दे रही हैं।

सरकारी तथा गैर-सरकारी सर्वेक्षणों अनुसार पंजाब के 70% स्कूली बच्चे गुटके, ज़र्दे तथा नशीली गोलियां सेवन करने के अभ्यस्त हो चुके हैं। जो देश तथा समाज के लिए बहुत ही निराशाजनक संकेत तथा चिन्ता का विषय बनता जा रहा है।

धार्मिक मण्डल में नशों की मनाही

जहां आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में नशों के सेवन करने वाले मनुष्य का मान-सम्मान कम होता है तथा धन की बर्बादी होती है, वहीं आध्यात्मिक क्षेत्र में मन की शान्ति तथा प्रभु प्राप्ति के लिए नशों का सेवन बहुत ही बड़ी रुकावट बनता है। मन की शान्ति तथा प्रभु नाम का रस उतना ही अधिक आयेगा, जितने दिमाग के सैल तथा नाड़ियां ताज़ी होंगी। यदि दिमाग के सैल तथा सम्पूर्ण स्नायु तंत्र नशों के प्रयोग से पागल ही हो गया हो, ऐसे पागल दिमाग वाले को नाम का रस तथा मन की शान्ति कदाचित् प्राप्त नहीं हो सकती। यदि हम पुरातन हिन्दू धर्म ग्रन्थों की ओर दृष्टि डालें तो नशों को तथा नशे का प्रयोग करने वालों को भविष्य स्कन्धादिक पुराण में वेद व्यास जी ने जितना धिक्कारा था, वह एक भद्र पुरुष को सुनना कठिन है। वेद व्यास जी लिखते हैं कि ब्रह्मा जी अपने पुत्र नारद को बता रहे हैं कि हे नारद ! तम्बाकू सूंघने, चबाने तथा पीने वाले को जो दान करता है, वह दान देने वाला दाता, घोर नरकों में पड़ता है तथा दान लेने वाला ब्राह्मण, सूअर की जून में पड़कर नगर की गन्दगी खाता है।

मूल॥ धूमर्पानंरतं बिप्रंदानंददती जे नरः॥
दातारो नरकं यांति ब्रहमणा ग्राम सूकरहः॥२५॥

छठे श्लोक में आप लिखते हैं कि जो मनुष्य नित्यप्रति ही तम्बाकू आदि नशे का प्रयोग करता है, उसके सारे श्रेष्ठ कर्म तथा पुण्य दान निष्फल हो जाते हैं। ऐसा नशेड़ी व्यक्ति संसार में महा नीच है तथा वह मरने के उपरान्त रौरवे[१] नरक में पड़कर अत्यन्त दु:ख भोगेगा।

मूल॥ उपासते तमालंवैक लौतु पुरखाधमः
खयीण पुंनया पति खंयंति महा रौरव संगके॥६॥

---

१. अत्यंत भयंकर और डरावना नर्क

व्यास जी अगले श्लोक में और लिखते हैं कि मांस आदि खाने से, शराब पीने तथा वेश्यागामी होने से, माता तथा बहन को भोगने से जितना पाप लगता है इतना सारे पापों का दोष उस मनुष्य को लगता है जो तम्बाकू का प्रयोग करता है तो हे नारद ! ऐसे अधम नीच तम्बाकू का त्याग करने में ही भलाई है–

मूल॥ अभख तक्खणांत पाप मगमयाग मणं चयत !

मदय पानात चयत पापं धूम्रपान समात्र ता॥७॥

आठवें श्लोक में व्यास जी फरमा रहे हैं कि जो मनुष्य तम्बाकू का प्रयोग करता है उस की सारी तीर्थ-यात्रा, प्रयागराज, यमुना, सरस्वती, हरिद्वार आदि के किये करोड़ों स्नान तथा दान सभी कुछ निष्फल जाता है जिसने एक बार भी तम्बाकू का प्रयोग कर लिया।

मूल॥ सनाताये सरब तीरबेखु॥ प्रायारम दुखा कोटिस॥

ब्रिथैव तान सरबाण तमाल मान प्रापतः॥८॥

तम्बाकू के प्रयोग से मनुष्य के सभी किये जप, तप, यम, नियम, व्रत और शुभ कार्य तुरन्त नष्ट हो जाते हैं। ऐसा है तम्बाकू का नीच नशा जो सारे पुण्य कर्मों को भस्म बना देता है।

मूल॥ ब्रतान नियम सचैव यमास चैव महांमते॥

ब्रिथैवतानि सरबांनि धूम्रपानसय मांत्रतः॥११॥

तम्बाकू तथा अन्य नशों के बारे इस स्कन्धादिक पुराण में 25 अन्य श्लोक पढ़ने योग्य हैं जो नशों तथा विशेष रूप से तम्बाकू को महा भ्रष्ट, बुद्धि को मलीन करने वाला तथा मनुष्य को नरकगामी बनाने वाला दिखाकर इस अत्यन्त नीच तम्बाकू से बचने के लिए प्रेरणा दे रहे हैं।

स्वामी दयानन्द की वसीयत

यहां नशों की बुराई बारे स्वामी दयानन्द के जीवन की एक घटना लिखनी अनुचित नहीं होगी। स्वामी दयानन्द ने आर्य-समाज का बहुत प्रचार किया तथा कई बार वे आर्य-समाज की विशेषताओं को ऊंचा दर्शाने के लिए कई महान् पुरुषों को भी नीचा दिखाने का प्रयत्न करता था। यहां तक कि इसने श्री गुरु

नानक देव जी तथा उन के सिद्धान्तों पर भी प्रश्न चिह्न लगाए जिसके उत्तर में सिक्ख विचारधारा के धारणी ज्ञानी दित्त सिंह जी ने तीन बार भरे दीवानों में उसके साथ विचार-विमर्श करके उसकी दौड़ें लगवाईं। ज्ञानी दित्त सिंह की गुरमति विचारधारा के आगे स्वामी दयानन्द टिक न सका।

जिस समय स्वामी दयानन्द का अन्तिम समय आया उस समय वह अजमेर में था। स्वामी जी ने अपने एक निकटतम व्यक्ति को पास बुलाया जिसका नाम मेहता भाग राम था। उसको अपनी अन्तिम इच्छा की वसीयत करके दी तथा मेहता भाग राम को भली-भान्ति समझाकर ताकीद की कि भूल न जाना। मेरा अन्तिम संस्कार आप वैदिक रीति-रिवाज़ों से करना तथा ध्यान रखना कि मेरे मृतक शरीर को ऐसा कोई भी व्यक्ति हाथ न लगाये, न ही स्नान करवाये तथा न ही मेरी अर्थी को कन्धा दे जो सिगरेट तथा तम्बाकू का प्रयोग करता हो। 30 अक्तूबर, 1883 ई. को स्वामी दयानन्द अजमेर शहर में देह त्याग गये। मेहता भाग राम तथा अन्य हिन्दू सम्मानीय (व्यक्तियों) को स्वामी जी की वसीयत याद आई। स्वामी दयानन्द की अन्तिम इच्छा को पूरा करने के लिए स्वामी जी के अन्तिम संस्कार का सारा कार्य सिक्खों के हवाले किया गया, क्योंकि सिक्ख तम्बाकू को पीना अथवा प्रयोग करना तो एक ओर रहा छूते तक नहीं। परन्तु आज यह पंक्तियां लिखते समय तक खेल कुछ विपरीत हो गया है। आज सिक्ख समाज को अपने ऊँचे साफ-सुथरे सिद्धान्त तथा गुरमति विचारधारा से जुड़ने की अत्यन्त आवश्यकता है। आज मनमति लोग गुरमति सिद्धान्तों की चोरी करके इन अनमोल शिक्षाओं पर अपना लेबल लगाकर अपनी दुकानें चला रहे हैं, परन्तु सिक्ख अनजाने में गुरमति के सुनहरी नियमों को तिलांजलि देकर गर्व अनुभव करते हैं जो हमारे लिए बहुत ही खतरनाक तथा निराशाजनक है।

गुरमति में तो सतगुरु जी ने प्रत्येक प्रकार के नशों से मुक्त रहकर केवल अन्न का आहार तथा नाम का नशा करके सच्चे अमली बनने की बार-बार शिक्षा दी है तथा बुद्धि को पागल करने वाले नशों से बचने का आदेश दिया है। सतगुरु अर्जुन देव जी का आसा राग में फ़रमान है।

दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥

आसा म: ५ (पृष्ठ ३९९)

बाबा कबीर जी ने भांग, मछली, शराब आदि नशों को सभी श्रेष्ठ कर्मों–धर्मों का नाशक दर्शाकर इन खाने वाली चीज़ों तथा नशों से बचने के लिए आदेश दिया है–

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाहि ॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसात्लि जाहि ॥

सलोकु कबीर जी (पृष्ठ १३७७)

बाबा कबीर जी का वचन सुनकर मान लेंगे तो सभी श्रेष्ठ कर्म सुरक्षित रहेंगे परन्तु यदि नहीं मानेंगे तो हानि हमारी ही होनी है, किसी अन्य की नहीं। भाई मरदाना जी ने शराब आदि के नशे को बहुत से विकारों का जन्मदाता बताकर इससे सदा के लिए बचने की प्रेरणा दी है। आप जी का वचन है–

इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥

बिहागड़े की वार (पृष्ठ ५५३)

सतगुरु अमरदास जी शराब आदि नशे का इससे अधिक अवगुण क्या बता सकते हैं ? आप जी फरमाते हैं कि शराब पीने वाले मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है तथा मनुष्य की बुद्धि में पागलपन प्रवेश करता है। शराब पीने से अपने तथा पराये की पहचान समाप्त हो जाती है। मनुष्य न करने योग्य कार्य करने लग जाता है। जिसके कारण इस लोक में भी अपमानित तथा परलोक में भी परमात्मा की ओर से मनुष्य आत्मा को धक्के पड़ते हैं।

इसलिए ऐसे झूठे लोक–परलोक को बिगाड़ने वाले नशों को बिल्कुल नहीं पीना चाहिए–

माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥
जितु पीते मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमह धके खाइ ॥

जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ॥

झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ॥

बिहगड़ा वार म: ३ (पृष्ठ ५५४)

जो मनुष्य नशों की मदहोशी में पागलपन जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, श्री गुरु अर्जुन देव जी ने उनको दुर्लभ अमोलक मानवीय जीवन को व्यर्थ बर्बाद करने वाले बताकर ऐसे ना-समझी वाले कार्य करने से मना करते हुए फ़रमान किया है-

होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ॥

रे नर एसी करहि इआनथ॥

मारु म: ५ (पृष्ठ १००१)

भाई देसा सिंह जी ने भी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के पावन वचन अपनी कलम से रहितनामे में दर्ज करके जीवन बर्बाद करने वाले पांच विकारी कर्मों का त्याग करने की प्रत्येक सिक्ख को प्रेरणा दी है। आपका वचन है-

पर नारी जूआ असत चोरी मदरा जान॥

पांच अैब ये जगत मौ तजे सो सिँघ सुजान॥

इससे आगे आप लिखते हैं कि बुद्धिमान सूझवान सिक्ख वही है, जो अभक्ष्य तथा बुद्धि को पागल करने वाले नशों की ओर नज़र तक नहीं डालता। क्योंकि नशे मनुष्य का लोक-परलोक नष्ट कर देते हैं।

कुठा[१] हुका चरस[२] तमाखु॥ गांजा[३] टोपी[४] ताड़ी[५] खाकू॥

इन की ओर न कबहु देखै। रहित वंत सु सिँघ वसेखै॥

रहितनामा भाई देसा सिंह जी

भाई सन्तोख सिंह जी ने शराब को सभी कुलों का नाश करने वाली, भांग को एक कुल नाशक, तम्बाकू को सौ कुलों को बर्बाद करने वाला बताकर इनका सदा के लिए त्याग करने की प्रेरणा दी है। आपका गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ में फ़रमान है।

---

१. मास आदि २. भांग से बना हुआ नशीला पदार्थ ३. मदीन भांग के बीज
४. तम्बाकू सेवन करने की चिलम ५. ताड़ के वृक्ष से बनी शराब

मदुरा[१] दहिती[२] सात कुल, भांग दहे तन एक॥
सौ कुल दहिता जगत जूठ[३] निंदा दहे अनेक॥

(गु: प्रताप सूरज ग्रंथ)

तवारीख गुरु खालसा में भी ऐतिहासिक प्रसंग आता है कि एक समय श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी सिक्खों सहित घोड़े पर सवार हो कर शिकार खेलने के लिए निकले। चलते-चलते गुरु महाराज जी का घोड़ा एक खेत में घुसने के लिए अटक गया। सतगुरु जी ने घोड़े को एड़ी भी लगाई, चाबुक भी मारा परन्तु घोड़ा आगे न चला। सतगुरु जी ने सिक्खों को आदेश दिया भाई सिक्खो ! घोड़े से उतर कर देखो कि इस खेत में क्या बोया हुआ है ? जो घोड़ा खेत में पैर नहीं डालता। सिक्खों ने घोड़ों से उतरकर ध्यान से देखा तो सतगुरु को विनती की कि पातशाह! खेत में तम्बाकू की बूटी बोई हुई है। सतगुरु ने वचन किया भाई सिक्खो! तभी तो इस खेत में पैर डालने से नीला अटककर खड़ा हो गया है। इस सारे मामले के पीछे सतगुरु ने सिक्खों को निर्देश दिया कि सिक्खो ! आपने देख ही लिया है। जिस धरती पर तम्बाकू बोया जाता है वह धरती भी अपवित्र हो जाती है जिसके कारण हमारी सवारी करने वाले घोड़े ने भी इस अपवित्र धरती में पैर नहीं डाला। इसलिए ऐसा महा-अपवित्र नकारा तम्बाकू जो सारे कर्मों-धर्मों को नष्ट करने वाला है प्रयोग करना तो एक ओर रहा आप इसको छूना तक नहीं। सिक्खों ने गुरु उपदेश सुनकर सिर झुकाया।

हम गाँवों में बसने वाले लोग प्रतिदिन देखते हैं कि जब किसी चरागाह में पशु चर रहे हों, घास चरते-चरते पशु आगे यदि तम्बाकू की बूटी आ जाये तो पशु ने तम्बाकू बूटी को तो क्या खाना है बल्कि तम्बाकू बूटी के साथ लगता हरा घास भी छोड़कर आगे निकल जाते हैं। तम्बाकू की बदबू इतनी गन्दी है कि गन्दगी खाने वाला कुत्ता भी इसकी बदबू से दूर भाग जाता है। प्रयोग करके देखा जा सकता है। जिस नगर में कुत्ते रहते हैं आमतौर पर उन्होंने अपने मल-मूत्र के लिए स्थान निश्चित किया होता है। ज़ोर लगाने पर भी वे उसी स्थान पर जाकर मल अथवा

---

१. शराब २. नाश करती ३. तुम्बाकू

मूत्र करते हैं। जिस स्थान पर कुत्ता प्रतिदिन अपना मल त्याग करता है उस स्थान पर हुक्के से निकला पानी डाल दो, कुत्ता कभी भी उस स्थान पर पेशाब नहीं करता। सोचने वाली बात है कि बेसमझ जानवरों को तो पवित्र-अपवित्र वस्तुओं की पहचान है परन्तु मनुष्य जिसको परमात्मा ने सभी योनियों का सिरदार बनाया है तथा प्रत्येक प्रकार की बुद्धि दी है वह प्रभु की बख़्शी विवेक बुद्धि की ओर पीठ करके अज्ञानी मन के पीछे लगकर भक्ष्य-अभक्ष्य चीज़ें खाकर पशुओं को भी पीछे छोड़ रहा है। परन्तु याद रखो! यदि हम बाबा कबीर जी के फ़रमान अनुसार **"कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै॥ काहे की कुसलात हाथि दीपु कूऐ परै॥** का काम करते जायेंगे। फिर **"कूए परै"** का परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा, उससे कोई बचा नहीं सकता। आज आवश्यकता है अपनी ही भलाई की खातिर गुरु से नेतृत्व प्राप्त करके विवेक बुद्धि के धारणी बनकर, नशों के कुएं में गिरने से बचकर, अपने अमूल्य मानवीय जन्म को सफल करने के लिए प्रयत्नशील हों।

जन्म साखी कर्त्ता के कथनानुसार श्री गुरु नानक देव जी ने सिद्ध योगियों को जो अन्ध विश्वास के कारण नशों का सहारा लेकर सुरति टिकाने का प्रयत्न करते थे, को थोड़ी देर सरूर तथा मदहोशी में ले जाने वाले नशों का त्याग करके आजीवन प्रसन्नता तथा सच्ची खुमारी प्रदान करने वाले नाम रस को पीने के लिए प्रेरणा देते हुए फ़रमाते हैं, कि

भांग अफीम चरस मद उतर जाइ प्रभात॥
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात॥

गुरबाणी में भी श्री गुरु अर्जुन देव जी ने बिलावल राग में हमें सबको नाम महा रस पीने की प्रेरणा दी है। आपका फ़ुरमान है।

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ॥

बिलावल म: ५ (पृष्ठ ८०२)

जिसकी सुरति को नाम का मजीठी रंग चढ़ जाता है श्री गुरु अर्जुन देव जी के कथनानुसार नाम का रंग कभी भी सुख-दु:ख में उतरता नहीं। नाम रंग की खुमारी को न तो उबलती देग उतार सकती है, न नाम रंग की खुमारी को आरे से चीरकर

उतारा जा सकता है। नाम खुमारी में रंगा अलमस्त, मतवाला तो चरखी पर चढ़कर **'धन घड़ी धन चरखड़ी, धन निआउ तुमारा। धरम हेत हम चड़हि चरखड़ी, धन वजूद हमारा॥''** मुख में से उच्चारण करता है। नाम का रसिया धर्म की आन-शान को कायम रखने के लिए खोपड़ी उतरवा कर भी 21 दिन निरन्तर मुंह से परमात्मा की वाणी जपुजी द्वारा प्रभु मिलाप के गीत गाता है। नाम रंग में रंगा प्रभु प्यारा तो असूल, नियम, धर्म के बदले अंग-अंग कटवाता हुआ भी **''तैसा हरखु तैसा उसु सोगु॥ सदा अनंद तह नही बिओगु''** का दोहा अलापता ही सुनाई देता है। जहां कहीं भी इतिहास के पृष्ठ देखें तो स्थान-स्थान पर धर्म, असूल, स्वाभिमान तथा दूसरों के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए अपनी कुर्बानी देने वाले नाम रंग में रंगे रक्त के साथ ही इतिहास लिखा मिलता है।

दूसरी ओर विश्व के इतिहास में कहीं कोई ऐसी उदाहरण नहीं मिलता जहां भांग, अफीम, चरस, तम्बाकू तथा शराब आदि के नशे प्रयोग करने वालों ने धर्म, असूल अथवा दूसरों के हित के लिए खुशी-खुशी स्वयं को कुर्बान किया हो। कोई विवशतापूर्वक मरा हो तो कहा नहीं जा सकता। आज आवश्यकता है पागल तथा मदहोश करने वाले थोड़ी देर के लिए नशों की गुलामी का त्याग करके आजीवन खुशी प्रदान करने वाले, स्वाभिमान को ऊँचा करने वाले तथा सत्य, अधिकार तथा अपने हित की रक्षा करने वाले नाम के रसिया बनकर अपना लोक सुखी ओर परलोक सुविधापूर्वक बनाने की।

जैसे कि हमारे समाज में एक कहावत प्रचलित है कि **''सौ बुद्धिमान एक मत, मूर्ख अपनी-अपनी।''** एक मत के दानियों तथा बुद्धिमानों में हमारे ही क्षेत्र के एक फकीर, दरवेश कवि गिरिधर राय जी हुए हैं, जिन्होंने आर्थिक, परमार्थिक तथा जीवन के अन्य पक्षों तथा शिक्षाएं देने वाले 341 छन्द जिनको कुण्डलिये छन्द कहा जाता है, लिखे हैं। इन कुण्डलिये छन्दों में से छः कुण्डलिये छन्द उन्होंने भांग, अफीम, पोस्त तथा शराब आदि नशों के प्रति लिखकर नशों के घातक प्रभाव से बचने के लिए सचेत किया है। मैं केवल गिरिधर जी के तीन कुण्डलिये यहां दर्ज किये हैं ताकि गिरिधर जी के नशों प्रति दृष्टिकोण को जाना

जा सके आप लिखते हैं-

पोस्त पीवहि बारनी[१] खात अफीम मजून॥
गटकै गांजा चरस जो सो वैराग ते सून[२]॥
सो वैराग ते सून अन्नथा[३] है उस संधी[४]॥
ऊहा पोहसै रहित बुध तिनकी भई अन्धी॥
[५]कहि गिरधर कविराय नहीं ये किसी का दोस्त॥
भांग तमाकु खात बारनी पीत जो पोस्त॥

हुके से हुरमत[६] गई नेम धरम गईयो छूट॥
दाम खरच कर लीयो तमाकु गई हीए की फूट॥
गई हीए की फूट आग को घर घर डोले[७]॥
जिस घर आग को जाए सोई[८] कुर रातो बोलै॥
कहि गिरधर कवि राय लगे जब जम को रूका[९]॥
प्रान जाहिन्गे छूट सहाय होए नहि हुका[१०]॥ २७८॥

आगे आप लिखते हैं-

खराब होन का उठियो जब चित घन को तरंग॥
चरस तमाकू पोस्ता पीवन लागियो भंग॥
पीवन लागियो भंग असुध का सुध कर खाध्यो॥
अविद्या का तब नाम खोज महा विद्या राखयो॥
कहि गिरधर कवि राय खावै अभख[११] अचै[१२] शराब॥
इन्ही लछनी आप परमेसर कीयो खराब॥

---

१. शराब २. शून्य ३. बेअर्थ ४. मिलाप ५. जो पोस्त भंग तम्बाकू, शराब आदि पीते है वह किसी के भी मित्र नहीं बनते। ६. मान, सनमान, इज्जत ७. घरों में जाता है ८. कड़वेपन से भरे हुए (कड़वे बोल) ९. पत्र चिट्ठी १०. तम्बाकू पीने वाली संगति ११. न खाने योग्य १२. पीना है।

एक सत्य घटना

डॉ. स्वरूप सिंह अलग ने अपनी पुस्तक **"गुरमति तथा नशे"** में अपने एक मित्र की आपबीती घटना दर्ज की है जिससे हमें काफी शिक्षा मिल सकती है। आप लिखते हैं कि टोरंटो में मेरे एक मित्र रहते हैं। वे स्वयं शराब नहीं पीते थे। अपने बच्चों को भी समय-समय पर कई उदाहरणें देकर समझाते तथा शराब को ज़हर दर्शाया करते थे क्योंकि शराब की बोतल पर भी लाल अक्षरों में POISON (ज़हर) लिखा होता है।

एक बार उनके घर में उनके तीन चार मित्र आ गये। मित्रों के अतिथि सत्कार के लिए उन्होंने मेज़ पर चार पांच गिलास तथा शराब की बोतल रख दी। यह सारा कुछ उनका छोटा बेटा देख रहा था। यह सारी क्रिया देखकर यह बच्चा अपने पिता के पास आ गया तथा शराब की बोतल हाथ में पकड़कर सभी के सामने अपने पिता को कहने लगा, डैडी ! यह अंकल जो हमारे घर आये हैं, यह कौन हैं ? आगे बच्चे के पिता ने कहा कि यह हमारे बहुत ही नज़दीकी मित्र हैं जो हमें मिलने आये हैं। आगे बच्चे ने उत्तर दिया जी ! आप इनके अच्छे मित्र हो जो घर आने वालों को पीने के लिए ज़हर दे रहे हो। उन्होंने बताया कि बच्चे की ऐसी समझदारी वाली बात सुनकर हम सभी निरुत्तर तथा शर्मसार हो गये तथा उन मित्रों ने हमेशा के लिए शराब न पीने का मन बना लिया तथा मैं भी मन में दृढ़ता बना ली कि जो चीज़ बुरी जानकर मैं नहीं प्रयोग करता घर आये को भी वही बुरी चीज़ पीने अथवा खाने को नहीं देनी क्योंकि जितना शराब तथा अन्य नशा प्रयोग करने वाला दोषी है उससे भी अधिक इन ज़हरीले नशों को दूसरों को देने तथा लगाने वाला दोषी है।

नशे की हानियां

1. नशे नपुंसकता तथा बांझपन का कारण बनते हैं

जैसे बुद्धिमानों का कहना है कि जवानी मस्तानी होती है। मतवालेपन में मनुष्य लापरवाही की स्थिति में आकर अपने काल्पनिक वेग में चला जाता है। मतवाला नौजवान न ही किसी बुद्धिमान की बात सुनता तथा न ही मानता है क्योंकि उसकी लाभ-हानि का लेखा-जोखा करने वाली वृत्ति नशे की लपेट में आ चुकी होती है जिसके कारण वह मदमस्त हाथी की चाल अपने बनाये काल्पनिक विचारों अधीन चलता जाता है।

आज नौजवान मतवाली-जवानी के आवेश में अन्धाधुंध अपनी धुन में, नशों के सेवन में दिन-रात गिरता जा रहा है, या तो नौजवानों को नशों के हानिकारक अन्त का पता ही नहीं या बाबा कबीर जी के कथनानुसार,

कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै॥

सलोक कबीर जी (पृष्ठ १३७६)

का कर्म कर रहे हैं। कुछ भी हो ज़हर ज़हर ही है, चाहे ज़हर की जानकारी लेकर खा लो, चाहे अनजानेपन में खा लो, ज़हर ने तो अपना प्रभाव दिखाना ही है। पांच सात वर्ष से जो नौजवान निरन्तर नशे का प्रयोग कर रहे हैं उनके प्रति मैडीकल सर्विस बोर्ड तथा समाज सेवी संस्थाओं ने जम्मू तथा पंजाब के क्षेत्रों का सर्वेक्षण करवाया है। उनकी ताज़ा रिपोर्टों के अनुसार शेष शारीरिक बिमारियों को छोड़कर सौ के पीछे 10 नौजवान नशे के निरन्तर सेवन के कारण बिल्कुल नपुंसकता का शिकार हो चुके हैं तथा 15% नौजवान, इस नामुराद बीमारी की लपेट में आकर नपुंसक होने वाले हैं जो इस बीमारी को ज़ाहिर करने में शर्मिन्दगी अनुभव कर रहे हैं ओर अपने परिवार से छिपकर डॉक्टरों को मुँह मांगी दौलत देकर पुन: मर्दाना शक्ति प्राप्त करने के प्रयत्न कर रहे हैं। आज आवश्यकता है सचेत होने की, आवश्यकता है नौजवान को अपने भले-बुरे तथा लाभ-हानि का लेखा-

जोखा करके संभलने की, ताकि आने वाले समय में नौजवान अपने वंशों को जारी रख सकें। बच्चों के प्रति भी सर्वेक्षणकर्त्ता की यही राय है कि जहां नौजवान नशों के निरन्तर सेवन से नपुंसक हो रहे हैं वहीं लड़कियों में भी नशा सेवन करने से जनन शक्ति दिन-प्रतिदिन कम होकर बांझपन का रोग बड़ी तीव्रता से फैल रहा है जिसके कारण नौजवान लड़के-लड़कियों का भविष्य बहुत ही खतरनाक मोड़ पर आ खड़ा हुआ है। यदि न संभले तो फिर पछताने के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं पड़ेगा।

2. नशे शरीर का नाश करते हैं

नशा तो कोई भी अच्छा नहीं, सभी नशे स्वास्थ्य तथा शरीर को क्षीण ही करते हैं। धन तथा इज्ज़त को मिट्टी में मिलाते हैं। अन्य अनेक ला-इलाज बिमारियों के जन्मदाता बनते हैं। अन्य नशों को एक ओर रखकर केवल तम्बाकू जिसको अनेक प्रकार से चबाकर, सूंघकर, सिगरेट द्वारा फेफड़ों में धुआं चढ़ाकर इससे नशा प्राप्त किया जाता है, इस बारे स्वास्थ्य वैज्ञानिकों की खोज है कि तम्बाकू का प्रयोग करने वालों के शरीर में तम्बाकू की ज़हरीली बूटी में से इक्कीस प्रकार के अत्यन्त खतरनाक ज़हर शरीर के अन्दर प्रवेश करते हैं, जो शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर घातक प्रभाव डालकर कहीं खाने वाली नली का नुकसान करते हैं, कहीं फेफड़ों, आंतड़ियों, जिगर तथा मुँह में कैंसर के रोग पैदा करने का कारण बनते हैं तथा कहीं गुर्दे, दिल तथा दिमाग[1] पर प्रभाव डालकर हाई ब्लड प्रैशर तथा जलोधर जैसे ला-इलाज रोगों को जन्म देते हैं। कहीं ये नशे के ज़हर पैनकरीआज़ का नुकसान करके मधुमेह रोग (Sugar) जैसी असाध्य बिमारियां पैदा करते हैं। दमा तथा सांस की तकलीफ (साँस घुटने तथा फूलने) की बीमारी तम्बाकू का सेवन करने वालों को अवश्य ही घेरती है।

---

1. डॉक्टरों की नवीन खोज के अनुसार एक बार शराब का नशा करने से दिमाग तथा स्नायु तंत्र के कई मिलीयन (दस लाख का एक मिलीयन होता है) सैल बेहोश हो जाते हैं। बेहोश हुए सैलों में से बहुत अधिक मर जाते हैं तथा जितने सैल मरते हैं उतने और बनते नहीं जिसके कारण दिमाग का सम्पूर्ण स्नायु तंत्र कमज़ोर हो जाता है तथा मनुष्य की स्मरण-शक्ति बहुत जल्दी कम हो जाती है।

तम्बाकू में जो इक्कीस प्रकार के ज़हर होते हैं उनमें से निकोटिन ज़हर सबसे अधिक खतरनाक होता है। निकोटिन ज़हर की एक बूंद कम-से-कम छः बिल्लियों अथवा दो कुत्तों को तुरन्त मार सकती है। निकोटिन ज़हर की आठ बूंदें यदि घोड़े जैसे शक्तिशाली जानवर को पिला दी जाये तो वह भी सैकिण्डों में चित्त हो जाता है। सोचने तथा विचार करने वाली बात है कि ऐसा खतरनाक ज़हर जिसकी एक बूंद छः बिल्लियों अथवा दो कुत्तों को सैकिण्डों में पार बुला सकती है तथा आठ बूंदें निकोटिन की यदि एक शक्तिशाली घोड़े को जान से मार देने की क्षमता रखती है तो क्या ऐसा खतरनाक तथा घातक ज़हर मनुष्य के अन्दर जाकर नुकसान न करता होगा। शराब का बेमुहारा नशा करने से मिरगी के दौरे आरम्भ हो जाते हैं। स्वास्थ्य वैज्ञानियों की राय अनुसार यह सारे ज़हर मनुष्य के शरीर के अन्दर जाकर (Slow Poison) के रूप में शरीर के सभी अंगों पर प्रभाव डालकर मनुष्य की समूची आयु 15 से 25 वर्ष तक कम करने का कारण बनते हैं। तम्बाकू का प्रयोग करने से प्रत्येक वर्ष पांच लाख से ऊपर मनुष्य, केवल हिन्दुस्तान में ही, अपनी बहुमूल्य जान हाथ से गंवा बैठते हैं। यदि सिगरेट पीने की आदत का यह सिलसिला इसी प्रकार जारी रहा तो आने वाले 2030 ई. तक तम्बाकू-नोशी से प्रत्येक वर्ष मरने वालों की संख्या एक करोड़ से ऊपर हो जायेगी। अन्य नशों से असमय मौत मरने वालों की संख्या अलग है।

आज UNICEF, FAO, IMEF तथा वर्ल्ड हैल्थ औरगेनाईज़ेशन (WHO) जैसी संस्थाएं जहां मनुष्य के स्वास्थ्य की संभाल के लिए प्रयत्नशील हैं वहीं बढ़ रहे नशों के रुझान को देखकर अत्यन्त चिन्तित हैं तथा सोचने के लिए विवश हो रही हैं कि तम्बाकू पीने वाले लोग तम्बाकू पीकर अपने स्वास्थ्य का नुकसान तो कर ही रहे हैं परन्तु उनकी ओर से सिगरेट के धुएं द्वारा जो वातावरण को प्रदूषित किया जा रहा है उस प्रदूषित धुएं का प्रभाव उन लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत हो रहा है जो सिगरेट नहीं पीते। यह समाज सेवी संस्थाएं इस Second Hand Smoking के हो रहे नुकसान को रोकने के लिए सभी देशों की सरकारों को कठोर कानून बनाने के लिए सिफारिशें कर रही हैं। कई देशों में पब्लिक स्थानों, सरकारी, अर्ध-सरकारी, प्राइवेट दफ्तरों, बस अड्डों, रेलवे

स्टेशन तथा हवाई अड्डों आदि पर सिगरेट पीने को अपराध घोषित कर दिया है तथा कठोरता से कानून की पालना की जा रही है परन्तु भारत जैसे महान् देश में कागज़ों में कानून तो बन चुका है परन्तु उसकी पालना नहीं हो रही जो आम जनता के साथ धोखा हो रहा है।

3. नशे धन की बर्बादी करते हैं

मानवीय शरीर की तीन आवश्यकताएं हैं, जिनको बुद्धिमानों ने ''कुली-गुली-जुली[१]'' का नाम दिया है। प्रत्येक मनुष्य को रहने के लिए मकान, खाने के लिए रोटी तथा गर्मी-सर्दी से बचने के लिए कपड़े चाहिएं। ये तीन चीज़ें धन से प्राप्त होती हैं। प्रत्येक मनुष्य सुबह से शाम तथा शाम से अगली सुबह तक धन की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है। धन प्राप्ति के लिए कोई नौकरी करता है, कोई कृषि तथा कोई वाणिज्य-व्यापार करता है। इस सारी भाग-दौड़ तथा धन कमाने के पीछे लालसा केवल सुख की प्राप्ति तथा कुली-गुली-जुली की आवश्यकताएं ही छिपी हुई हैं।

जब किसी मनुष्य का कोई पिछले जन्म का बुरा कर्म ज़ोर डालता है तब मनुष्य बुरी संगत के कारण अथवा अज्ञानता के कारण या दूसरों की ओर देख-देखकर नशों की गिरफ्त में आ जाता है। जब मनुष्य ने एक बार नशों का पल्ला पकड़ लिया कवि गिरधर के कथनानुसार उसने अपनी बर्बादी की नींव रख ली समझो।

खराब होन दा उठियो जब चित धन को तरंग॥
चरस तमाकु पोस्ता पीवन लागियो भंग॥

जैसे-जैसे मनुष्य नशे करने आरम्भ कर देता है, वैसे-वैसे मनुष्य सुख से रहना तथा आलसी बन जाता है। सुख से रहना तथा आलसी मनुष्य काम से कन्नी काटने लग जाता है। जैसे ही मनुष्य काम से कन्नी काटने लगता है वैसे ही मनुष्य की आय कम होनी शुरु हो जाती है। आय कम होने पर मनुष्य अपनी आवश्यकताएं कम नहीं करता, आवश्यकताएं जैसे की तैसे ही रहती हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नशेड़ी मनुष्य संचित धन प्रयोग करना शुरु कर देता है। जब परिश्रम

---

१. कुली-गुली-जुली-रोटी, कपड़ा और मकान

से एकत्रित किया धन समाप्त हो जाता है फिर बाप दादा की विरासती जायदाद पर हाथ डाल लेता है उसको बेचकर अपनी आवश्यकताएं पूरी करता है तथा नशे की बुरी आदत को पूरा करता है। बाप दादा की विरासती जायदाद बेचकर नशेड़ी मनुष्य दु:ख भी कम अनुभव करता है क्योंकि उसने स्वयं परिश्रम करके यह जायदाद नहीं बनाई होती। नशेड़ी मनुष्य जायदाद बेचने के उपरान्त एक दिन कंगाल बन जाता है। जैसे बुद्धिमानों की कहावत है कि ''खाते खाते तो कुएं भी खाली हो जाते हैं'' कुएं खाली तो सरलता से हो जाते हैं परन्तु उसको भरना बहुत कठिन है। आज तक नशेबाज लोग कुएं खाली करते ही देखे हैं भरता कोई नहीं देखा। आज तक कोई ऐसा मनुष्य देखने में नहीं आया कि जिसने नशे भी जी भरकर किये हों तथा धन भी जी भरकर कमाया हो। ऐसा समझ लेना चाहिए जिस घर में एक बार नशों का प्रवेश हो गया उसी दिन से उस घर की बर्बादी तथा उजाड़ा होना आरम्भ हो गया। इस कारण उजड़ने से बचने के लिए विश्व में मान-सम्मान के साथ समय व्यतीत करने के लिए तथा अमूल्य मानवीय जीवन की सफलता के लिए सदा नशों की बुरी आदत से बचने में ही भलाई है।

4. नशे समाज में मान-सम्मान को कम करते हैं

प्रत्येक मनुष्य विश्व में मान-सम्मान वाला जीवन व्यतीत करना चाहता है। आदर-सत्कार में वृद्धि करने के लिए ही मनुष्य मित्रों, दोस्तों, अमीरों, वज़ीरों तथा अफ्सरों आदि के साथ सांझ बनाता है। विश्व में मान-सम्मान से रहने के लिए ही बड़े-बड़े सुन्दर महल निर्मित करता है तथा धन एकत्रित करता है। मान-सम्मान प्राप्त करने के लिए ही मनुष्य कई एक सोसायटियों तथा समाज-सेवी संस्थाओं का सदस्य बनकर लोक भलाई के कार्य करता है। अधिकतर इस सारे आडम्बर के पीछे समाज की प्रसिद्धि प्राप्त करना ही मनुष्य का उद्देश्य होता है।

नित्य प्रति के जीवन में हम देखते हैं कि ऐसे मनुष्य की अमीरों-वज़ीरों, अफ्सरों के साथ निकटतम सांझ भी हो, धन सम्पत्ति भी आवश्यकता से अधिक हो, रहने के लिए कोठी भी सुन्दर हो, मनुष्य समाज सेवी संस्थाओं का अध्यक्ष बनकर लोक-कल्याण के कार्य भी आगे बढ़कर करता हो परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसे मनुष्य नशों में पड़ जाये तो सारा कुछ होते हुए भी नशेबाज मनुष्य का मान-

सम्मान समाज में दिन-प्रतिदिन कम होना आरम्भ हो जाता है। पहले-पहले लोग ऐसे मनुष्य के मुँह पर तो प्रशंसा करते हैं परन्तु पीठ पीछे परोपकार के कार्यों को पीछे रखकर नशे के अवगुणों को आगे रखकर लोगों में इस बात का प्रचार करने लग जाते हैं। जिस ज़ुबान से उसके मुँह पर प्रशंसा करते हैं, उसी ज़ुबान से यह भी कहते हैं कि दिन के समय तो बन्दा बड़ा शरीफ तथा इज़्ज़तदार बनकर लोगों को लोक सेवा का सबक पढ़ाता है तथा अच्छे बनने के लिए भाषण झाड़ता है परन्तु शाम के समय इसकी स्थिति देखने वाली होती है। शराब की बोतल खत्म किये बिना इसको नींद ही नहीं आती। ऐसे दोगले इन्सान का क्या भरोसा। नशे के सरूर में कुछ और, सोफी स्थिति में कुछ और, जिस इन्सान के दो रूप बन जायें वह विश्वास के योग्य कैसे हो सकता है ?

माता-पिता, पुत्र-पुत्री, एक कमरे में बैठकर टेलीविज़न पर अश्लील फिल्में देखते, घटिया गाने सुनते तथा शराब पीते हैं। आज के दो-तीन दशक पूर्व पर दृष्टि डालें, यदि कोई परिवार का सदस्य कभी-कभी भूलकर शराब पी लेता था वह अपने परिवार के सामने उतनी देर नहीं आता था जितनी देर नशा उतर न जाये। परन्तु आज स्थिति ऐसी बन गई है कि ऐसे बुरे नशे को हम सोशल ड्रिंक का नाम देकर पश्चिमी सभ्यता के गुलाम बन गये हैं तथा अपने अमीर विरासत को तिलांजलि दे रहे हैं। चाहे समय ने करवट बदल ली है जिसके अधीन हम बुराईयों को अच्छाईयों का लेबल देकर स्वयं को धोखा दे रहे हैं परन्तु याद रखें नशाखोर मनुष्य का न कोई अन्दर से सम्मान करता है तथा न उसकी ज़ुबान का भरोसा करता है। नशे के अधीन मनुष्य आलसी तथा दरिद्री बन जाता है। दरिद्री तथा आलसी मनुष्य को कोई अच्छा नहीं कहता। प्रशंसा तथा मान-सम्मान सदा उद्यमियों तथा परिश्रमों का ही होता आया है तथा होगा। आज आश्यकता है मनुष्य को समाज में अपना मान-सम्मान बढ़ाने के लिए तथा स्वाभिमान वाला जीवन व्यतीत करने के लिए, बुद्धि को पागल करने वाले नशों का त्याग करें तथा

"राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली"

(आसा म: ५ पृष्ठ ३९९)

सचे अमली बनकर अपना लोक-परलोक में मान-सम्मान प्राप्त करें।

5. नशे रिश्ते-नाते करने में बड़ी रुकावट बनते हैं

प्रत्येक माता-पिता की यह हार्दिक इच्छा होती है कि हमारे बच्चे तथा बच्चियों को कोई योग्य रिश्ता मिल जाये ताकि वे अपना गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता हुआ और भी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को समझे तथा हमारा भी बुढ़ापे का सहारा बने। प्रतिदिन जीवन में हम देखते हैं कि जब कोई माता-पिता अपनी बेटी का रिश्ता करने के लिए घर-बाहर ढूंढने के लिए प्रयत्नशील होते हैं तब रिश्ता करने से पहले वे लड़के की ज़मीन-जायदाद बारे, पढ़ाई बारे, नौकरी बारे, उसके स्वभाव बारे तथा पिछले खानदानी विरासत बारे पूरी पड़ताल करते हैं। ऊपर लिखी सभी शर्तें बच्चा पूरी करता हो, उसके पास ज़मीन जायदाद भी अधिक हो, वह अच्छा पढ़-लिखकर नौकरी भी अच्छी करता हो, उसका स्वभाव भी अच्छा हो। सभी गुणों का मालिक हो तथा सांसारिक शर्तों को पूरी करने के बावजूद भी यदि लड़की के माता-पिता को यह पता चल जाये कि लड़का नशे का सेवन करता है, तो लड़की के माता-पिता अपनी लड़की का रिश्ता करने का बनाया हुआ मन बदल लेते हैं तथा रिश्ता करने से इन्कार कर देते हैं। मन क्यों बदला ? इसके उत्तर में वे कहते हैं कि चलो यदि जायदाद कम भी होती तो अपने आप और बन जानी थी परन्तु जिस घर में नशों का निवास हो, उन नशों ने विरासत में वृद्धि तो क्या करनी है, एक दिन यह नशे सारी जायदाद तथा बनी-बनाई पैतृक जायदाद को भी हड़प करके हमारे सम्पूर्ण समाज में अपमान का कारण बनेंगे। नशों के कारण बनता-बनता रिश्ता टूट जाता है।

इसी प्रकार यदि लड़के वालों को पता चल जाये कि जिस जगह हम अपने लड़के का रिश्ता कर रहे हैं वह लड़की बुद्धिमान्, सुन्दर, पढ़ी-लिखी तथा सुशील स्वभाव की है तथा और भी सारे गुणों में निपुण है। सारे गुण, शक्ल-सूरत देखकर लड़के वाले रिश्ता करने का मन बना लेते हैं परन्तु यदि किसी सज्जन से उनके कानों में यह बात पड़ जाये कि लड़की, माता-पिता से चोरी-छिपे नशे का प्रयोग कर लेती है, यह खबर सुनकर लड़के के माता-पिता तथा स्वयं लड़का ऐसी लड़की का रिश्ता एक-दम अस्वीकार कर देते हैं। रिश्ता टूटने का कारण ? केवल नशे का प्रयोग।

देखने तथा सोचने वाली बात है कि सुन्दरता, समझदारी, सुशीलता, पढ़ाई-लिखाई, अच्छा खानदानी परिवार आदि सभी गुण एक नशे की काली चादर नीचे ढक जाते हैं। ये नशे, बनने वाले रिश्ते तथा बने हुए रिश्तों को तोड़ने का कारण बनते हैं तथा पारिवारिक जीवन को नरक बना देते हैं।

6. नशे मनुष्य को अपना गुलाम बना लेते हैं

जैसे गुलाम मनुष्य के जीवन से आज़ादी पंख लगाकर उड़ जाती है। गुलाम की सोच, गुलाम के जीवन का लक्ष्य केवल अपने मालिक को प्रसन्न करने तक ही सीमित होता है। जैसे गुलाम अपने मालिक को प्रसन्न करने के लिए अपने स्वाभिमान, इज़्ज़त-आबरू सब कुछ दांव पर लगा देता है, वैसे नशों की गिरफ्त में फँसा मनुष्य नशों की गुलामी स्वीकार करके नशा पूर्ति के लिए अपने परिवार, धन-धाम, इज़्ज़त-आबरू, मान-सम्मान आदि सब कुछ को नशा पूर्ति के लिए दांव पर लगा देता है। केवल नशा पूर्ति ही नशेबाज मनुष्य के जीवन का लक्ष्य बन जाता है। नशा पूर्ति के लिए यदि उसको घर-बाहर, ज़मीन-जायदाद यहां तक कि घर के बर्तन तक भी बेचने पड़ें वह बेच देता है। नशा पूर्ति के लिए चोरी करनी पड़े, डाका मारना पड़े, नशेबाज ऐसा कार्य करने को तैयार रहता है। यदि नशे की पूर्ति के लिए नशेबाज को मांगना भी पड़े वह हाथ फैलाकर मांगता है। नशाखोर तो अपने ईमान को बेचकर भी नशे की लत को पूरा करता है। लोक-लाज, परिवार, सज्जन-मित्र किसी की परवाह नहीं करता। नशाखोर मनुष्य को न तो अपने माता-पिता की तथा न ही अपने परिवार तथा बच्चों की चिन्ता रहती है। यदि नशेड़ी को कोई चिन्ता है तो वह केवल नशा पूर्ति की ही होती है। नशे के गुलाम मनुष्य को अपने लाभ-हानि की भी समझ नहीं रहती तथा न ही वह किसी बुद्धिमान हमदर्द की बात सुनता तथा मानता है। यदि वह बात सुनता तथा मानता है तो केवल नशे अधीन गुलाम हुई अपनी मानसिकता की, अन्य किसी की नहीं। नशाखोर मनुष्य के जीवन का कोई लक्ष्य नहीं रहता। उसकी मानसिकता बड़ी अजीब सी बन जाती है जिस स्थिति में वह जी रहा होता है उसका उसको स्वयं भी पता नहीं होता **"पराधीन सपनेहुँ सुख नाही"** वाली स्थिति उसको प्रत्यक्ष प्रतीत होती है परन्तु नशों की गुलामी की पकड़ से वह निकल नहीं सकता।

नशेड़ी की सोच केवल नशापूर्ति तक ही सीमित रह जाती है। जैसे गुलाम मनुष्य का जीवन मनोरथ अपने मालिक को प्रसन्न रखने तक ही सीमित होता है वैसे नशाखोर मनुष्य का जीवन मनोरथ भी केवल नशे की लत को पूरा करना ही रह जाता है।

7. नशे थाने, कचहरियों तथा जेलों की रौनक बढ़ाते हैं

श्री गुरु अर्जुन देव जी के फरमान अनुसार परमात्मा ने प्रत्येक जीवन को **"बीज मंत्रु सरब को गिआनु॥ (सुखमनी म: ५)"** की बख़्शीश दी है। एक मनुष्य योनी को छोड़कर बाकी सभी योनियों को केवल शरीर को जीवित रखने के लिए खाना-पीना भोगने तक ही सूझ दी है। परन्तु मनुष्य जिसको परमात्मा ने सम्पूर्ण सृष्टि का सरदार बनाया है ज्ञान तथा बुद्धि भी सबसे अधिक प्रदान की है, जिसके द्वारा मनुष्य पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ का विचार करके सही ढंग से सुखी अथवा सहज-सुखी जीवन व्यतीत करके अपना लोक-परलोक सुखी कर सकता है। प्रत्येक मनुष्य को कोई भी कर्म करने से पहले प्रभु द्वारा प्रदान ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए। श्री गुरु नानक देव जी का सारंग की वार में फरमान है।

अकली साहिबु सेवीए अकली पाई मानु
अकली पढ़ि कै बुझीए अकली कीचै दानु॥

सलोक म: २ (पृष्ठ १२४५)

प्रत्येक अच्छा-बुरा कर्म करने से पहले मनुष्य के अन्दर से एक आवाज़ उठती है जिसको ज़मीर की, आत्मा की आवाज़ कहा जाता है। जो मनुष्य बुद्धि, ज्ञान अथवा अक्ल से धैर्य में रहकर ज़मीर की आवाज़ को सुनकर कर्म करता है, वह तो बुरे पाप कर्मों से बच जाता है परन्तु जो मनुष्य ज़मीर की आवाज़ को अनसुना कर देता है उससे पाप कर्म अवश्य हो जाते हैं। ऐसे ही मनुष्यों के प्रति, जो ज़मीर की आवाज़ को अनसुना कर देते हैं श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सुखमणी साहिब में फरमान किया है। **"करतूति पसू की मानस जाति"** क्योंकि ज्ञान, विवेक पास होने के बावजूद भी वह विवेकहीनता तथा नासमझी के कर्म करते हैं। कई बार मनुष्य अपने मन के पीछे लगकर पाप कर्म करने की हठधर्मी करता है परन्तु आत्मा (ज़मीर) की आवाज़ फिर भी उसको रोकने का प्रयत्न करती है। अन्दर से उठ रही ज़मीर की आवाज़ दबाने के लिए मनुष्य नशे का सहारा लेकर

पाप कर्म कर लेता है क्योंकि नशा पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, बुद्धि पाप-पुण्य तथा अच्छे-बुरे का निर्णय करने में असमर्थ हो जाती है। पाप कर्म करने के उपरान्त जब बुद्धिहीन व्यक्ति का नशा उतरता है तब मनुष्य के पास केवल पश्चाताप तथा थाने-कचहरियों के चक्कर ही पड़ते हैं। सारी उम्र मनुष्य को जेलों में दण्ड भोगते हुए अपमान की ज़िन्दगी व्यतीत करनी पड़ती है। जितनी लड़ाई, झगड़े, कत्ल, बलात्कार, चोरी-चकारी-ठगी, फरेब आदि के केस चल रहे हैं, थाने, कचहरियों तथा जेलों की रौनक देख ही रहे हैं, इन सब के पीछे अधिकता में नशों का ही संरक्षण कार्य करता नज़र आता है। आजकल तो नौजवानों ने ड्रग गैंग बनाये हुए हैं जो बड़ी राशि लेकर प्रत्येक प्रकार के जायज़-नाजायज़ कर्म करते हैं। जो इन गैगों में से निकलने का प्रयत्न करता है अन्य गैंग के सदस्य उसको जान से मार देते हैं। अक्ल तथा बुद्धि को पागल बनाने वाले नशे, कचहरियों, थानों तथा जेलों की रौनक तो अवश्य बढ़ाते हैं परन्तु घर की खुशियां, रौनक उजाड़ देते हैं। घर-घाट, धन-सम्पत्ति तथा मान-सम्मान का अन्त कर देते हैं।

8. नशे दुर्घटनाओं का मुख्य कारण बनते हैं

नित्यप्रति के जीवन में जब आप सड़कों पर सफर कर रहे होते हैं तो 20-25 मील सफर करने के पश्चात् अवश्य ही कहीं न कहीं कोई ट्रक उलटा हुआ अथवा ऐक्सीडैण्ट से चूर हुई गाड़ी दिखाई देती है। जब किसी समाचार-पत्र का पृष्ठ पलटते हैं तो उन पृष्ठों पर भी क्षेत्रीय स्तर पर पांच-छः ऐक्सीडैण्ट की तस्वीरें तथा समाचार-पत्र देखने तथा पढ़ने को मिलते हैं जिनमें पूरे के पूरे परिवार समाप्त हुए अथवा अत्यन्त नाज़ुक स्थिति में अस्पताल दाखिल करवाये दर्शाये होते हैं। क्षेत्रीय स्तर से ऊपर उठकर यदि सारे देश में एक दिन की सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़े एकत्रित किये जायें तो संख्या सैंकड़ों नहीं, हज़ारों में पहुँचने की संभावना है जो नशेड़ी ड्राईवरों की लापरवाही अथवा नशे की खुमारी में हुई दुर्घटनाओं में असमय मौत मारे जाते हैं। ऐक्सीडैण्टों के सर्वेक्षणकर्त्ता के मत अनुसार 85% सड़क दुर्घटनाओं का मुख्य कारण नशों का अधिकता में सेवन करना ही निकलता है। टैक्सी ड्राईवर अथवा ट्रक ड्राईवर सवारियों को अथवा सामान को निश्चित स्थान पर शीघ्रता से पहुँचाकर अन्य सवारियां उठाने के लिए तथा शरीर की थकावट उतारने तथा चुस्त रहने के लिए कोई-न-कोई

नशा प्रयोग करते हैं। ड्राईवरों को नशे सड़क पर बने ढाबों तथा चाय की दुकानों पर आराम से मिल जाते हैं। प्रत्येक नशे का इशारा अथवा नाम इन्होंने अपनी ही बोली में रखा होता है। ड्राईवर के इशारा मिलते ही ढाबे का नौकर जल्दी-जल्दी पानी का गिलास तथा नशा सवारियों से छिपकर लाकर देता है। नशा खाते ही शरीर की थकावट तो दूर हो जाती है परन्तु साथ ही नशे के प्रभाव से दिमाग का स्नायु तंत्र अर्द्ध मदहोश हो जाता है। अर्द्ध मदहोशी में जब ड्राईवर तेज़ गति से गाड़ी चलता है, इस तीव्र गति में ड्राईवर सड़क के सभी कायदे-कानून बिल्कुल भूल जाता है। अपने हिस्से आती सड़क को छोड़कर बिना आगे-पीछे देखे आगे चल रही गाड़ियों को ओवरटेक करते हुए किसी-न-किसी सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिदिन हज़ारों बेकसूर इन्सान मारे जाते हैं।

इन नशाखोर ड्राईवरों से जो मनुष्य बचना भी चाहे तब भी बच नहीं सकता। इन्होंने तो पहले ही गाड़ियों पर "रब्ब राखा" जैसे शब्द लिखवाये होते हैं। इनकी ओर से दूसरों की रक्षा की अथवा अपनी रक्षा की कोई गारंटी नहीं। साधारण देखने में आता है कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति अपने हाथ नियमित गति के अन्दर अपनी गाड़ी में सड़क पर जा रहा है। कोई नशाखोर ड्राईवर सामने से अथवा पीछे अथवा साईड से अपनी गाड़ी उसकी गाड़ी में मार दे, नुकसान तो दोनों का समान ही होना है। दोष एक का भरपाई दोनों को करनी पड़ जाती है। ऐसे मामले हम प्रतिदिन ही सड़कों पर देखते हैं। यहां मैं स्वयं ऐसी बीती घटना लिखना चाहता हूं। 6 दिसम्बर 2006 को मैं दिल्ली से पंजाब की ओर अपनी आइनोवा गाड़ी द्वारा सफर कर रहा था। ड्राईवर बड़े सहज धैर्य से गाड़ी चला रहा था। जब हम खन्ना से समराला-माछीवाड़ा होकर राहों कस्बे में पहुँचे तो सामने से एक 35 वर्ष के लगभग आयु वाला नौजवान नशे में धुत्त रायल एनफील्ड मोटर साईकिल पर बड़ी तीव्रता से आगे चल रही गाड़ियों को पास करता हुआ देखा। देखते-देखते ही उसने अपने हाथ चल रहे एक रिक्शा ड्राईवर के रिक्शे में अपना मोटर साईकिल मार दिया। रिक्शे में मोटर साईकिल लगते ही जहां रिक्शा टूटकर दुहरा हो गया वहीं रिक्शे वाला तथा मोटर साईकिल सवार पटकनी खाकर सड़क पर जा गिरे। रिक्शा चालक के काफी चोटें लगीं, मोटर साईकिल वाले की एक टांग तथा दोनों बाजू टूट गए, सिर में चोट लगने के कारण वह बेहोश हो गया

परन्तु मरने से बच गया। यह घटना घटित होने के उपरान्त मोटर साईकिल असंतुलित होकर जहां से हम जा रहे थे सीधा हमारी गाड़ी के अगली ओर आकर लगा, जिसने गाड़ी का बम्पर, रेडिएटर, लाईटें तथा सारा कूलिंग सिस्टम तोड़ दिया। जिसकी मुरम्मत का खर्चा एक लाख पैंसठ हज़ार रुपये हमें भरना पड़ा। ऐक्सीडैण्ट होने के उपरान्त पुलिस द्वारा हुई पूछताछ के उपरान्त पता चला कि यह नौजवान अपने साथियों के साथ एक मैरिज पैलेस में गाना बजाने का धन्धा करके आया है, वहां मुफ्त की शराब अधिक पी लेने से यह घटना घटित हुई। दो तीन घण्टे की भाग-दौड़ के उपरान्त गाड़ी एक पैट्रोल पम्प पर खड़ी की, पन्द्रह सौ रुपये में टैक्सी करके आधी रात को हम अपनी मंज़िल पर पहुँचे। ज़रा विचार करने की आवश्यकता है कि इस इन्सान ने मुफ्त की शराब पीकर, रिक्शे वाले का रिक्शा तोड़ा तथा उसको कई दिन चारपाई पर पड़े रहने के लिए विवश कर दिया। अपना नया मोटर साईकिल कबाड़ियो को देने वाला कर लिया तथा टांगें, बाजू तुड़वाकर सारी उम्र के लिए अपाहिज बन गया। हमें अपने हाथ सही सलामत चलने वालों को परेशानी में डालकर एक लाख पैंसठ हज़ार रुपये का चूना लगा दिया। ऐसे चूना लगाने वाले मामले पता नहीं एक दिन में कितने देखने को मिलते हैं। इन नशाखोर ड्राईवरों ने खुद तो मरना ही होता है। आप मरते-मरते अनेक अन्यों को अपने साथ ले जाते हैं। सरकार ने स्थान-स्थान पर बड़े-बड़े बोर्ड लिखकर लगाए हुए हैं कि नशा पीकर गाड़ी चलाना अपराध है। परन्तु अधिकतर संख्या में नशा पीकर ही गाड़ियां चलाई जाती हैं, कोई पूछताछ करने वाला नहीं। यदि कोई अधिकारी चालान करने वाला मिल भी जाये वह भी हरा नोट ड्राईवर के हाथ में देखकर कुछ नहीं कहता। कई बार तो ऐसा अनुभव होता है कि जितने भी कायदे-कानून बने हुए हैं वे केवल भले पुरुषों तथा कानून की पालना करने वालों के लिए ही हैं। कानून की उल्लंघना करने वालों पर कोई कानून लागू नहीं होता। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

9. नशे, शुभ कर्मों का नाश करते हैं तथा परलोक को बिगाड़ते हैं

विश्व एक सराय है। यहां आवागमन का सिलसिला निरन्तर चल रहा है। हमारे पूर्वज भी कहीं से यहां आये थे, समय व्यतीत किया यहां से चले गये। हम भी उनकी भान्ति पीछे कहीं से आये हैं। प्रभु मालिक की ओर से नियत किया

हुआ समय भोगकर हम भी उसी दिशा में चले जायेंगे। इन दोनों स्थानों को गुरुवाणी में लोक-परलोक, हलत-पलत, यहां-वहां, आगे-पीछे का नाम देकर श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया है, कि हे प्रेमी जनों ! प्रभु का चिन्तन करो, यह संसार सदा रहने वाला नहीं, सभी ने अपनी-अपनी बारी अनुसार यहां से चले जाना है आपका फ़ुरमान है-

साहिबु सिमरिहु मेरे भाई हो सभना एहु पइआणा॥
एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा॥
साहिबु सम्हालह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा॥

रागु बडहसु म: १ (पृष्ठ ५७६)

यहां के किये हुए बुरे कर्म तथा पिये हुए नशे आगे (परलोक) को बिगाड़ देते हैं। हलत में नशों में धुत्त होकर की मनमानियां पलत का नाश कर देती हैं। चाहे नास्तिक विचारधारा के कुछ एक लोग यह कहते ही सुनते हैं कि **"इह जग मिठ्ठा अगला किस ने डिठ्ठा"** परन्तु जिन्होंने दिव्य नेत्रों से देखा है वे पुकार-पुकार कर साक्षी भरते हैं कि हे संसार के लोगो ! पवित्र आत्माओं की शिक्षा को ध्यान देकर सुनो क्योंकि वे सन्त जन वही वचन मुँह से बोलते हैं जो उन्होंने आंखों से देखे होते हैं। श्री गुरु अर्जुन देव जी का फरमान है।

संतन की सुणि साची साखी॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी॥

रामकली म: ५ (पृष्ठ ८९४)

'[१]पेखे आखी' वालों की ओर से श्री गुरु अमरदास जी स्वयं गवाही भरते फरमान करते हैं कि हे प्राणियो ! यह संसार के झूठे नशे जिन्हें पीने के बाद बुद्धि पागल हो जाती है, अपने तथा पराये की सूझ नहीं रहती, इस संसार में नशे पीकर प्रभु से दूरी बढ़ जाती है, लोक-परलोक में अपमान झेलना पड़ता है तथा दरगाह में सज़ा भोगनी पड़ती है, ऐसे नशों को कदाचित् भी नहीं पीना चाहिए।

जित पीतै मति दूर होइ बरलु पवै विचि आइ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमह धके खाइ॥
जित पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ॥

बिहागड़ा वार म: ३ (पृष्ठ ५५४)

भक्त कबीर जी ने प्रभु भक्ति करके जहां लोक-परलोक की सूझ प्राप्त की वहीं भक्ति करके **"राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी"** की अवस्था को माना। उन्होंने संसार की भलाई के लिए जीवन के प्रत्येक पहलू को सहज तथा सुविधापूर्ण बनाने के लिए गुरुबाणी द्वारा अमोलक शिक्षाएं प्रदान कीं। उन्होंने भी नशों का सांकेतिक नाम लिखकर नेतृत्व दिया है कि जो मनुष्य अभक्ष्य[२] खाते और नशे का प्रयोग करते हैं उन्होंने जितने भी भले कर्म पुण्य-दान, व्रत नेम, तीर्थ-यात्रा आदि किये हैं, वे (अभक्ष्य खाने तथा नशे पीने से) सभी निष्फल हो जाते हैं अर्थात् फलीभूत नहीं होते।

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाहि॥
तीरथ बरत नेम कीए से सभै रसातलि जाहि॥

सलोक कबीर (पृष्ठ १३७७)

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने मारू राग में स्पष्ट शब्दों में नसीहत की है कि हे मनुष्य ! तू बुद्धि को पागल करने वाले नशे प्रयोग करके बच्चों जैसी बात मत कर। यदि तू ऐसी अज्ञानता वाली बात करता गया फिर तेरा दुर्लभ, अमूल्य मानव जन्म व्यर्थ ही चला जायेगा। आपजी का फरमान है-

होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ॥
रे नर ऐसी करहि इआनथ।

मारु म: ५ (पृष्ठ १००१)

भविष्यत स्कन्धादिक पुराण में तम्बाकू तथा अन्य नशों को नरक में ले जाने वाले सभी अपराधों की जड़, श्रेष्ठ कर्मों-धर्मों के नाशक बताकर नशों को न प्रयोग करने के लिए सचेत किया है। यदि गुरुओं महापुरुषों की सच्ची शिक्षा सुन लेंगे हमारा भला हो जायेगा। न सुनेंगे अथवा सुनकर अनसुना कर देंगे फिर नुकसान किसी का नहीं हमारा ही होना है।

---

१. जो आखों से देखते है।

२. न खाने वाली वस्तु (यथा मास और शराब)

कर्त्तव्यों से लापरवाही

1. माता-पिता की लापरवाही

जिन-जिन की भी नौजवान पीढ़ी को नशों के घातक प्रभाव से सचेत करने तथा बचाने की ज़िम्मेदारी थी उन सभी ने अपनी ज़िम्मेदारियों की ओर से लापरवाही धारण की हुई है। सबसे पहले बच्चे को अच्छी शिक्षा देनी तथा बुरी संगत से बचने के लिए सावधान करना माता-पिता का कर्त्तव्य था परन्तु माता-पिता ने पैसा कमाने को तथा अन्य कार्यों को अपना सारा समय समर्पित कर दिया है।

बच्चे, जो माता-पिता का वास्तविक धन हैं तथा जिन्होंने माता-पिता के कमाये धन को संभालना तथा उसका प्रयोग करना है उसको संभालने तथा उनको सही दिशा देने के लिए माता-पिता के पास समय ही नहीं है। कोई अद्भुत बुद्धिमान माता-पिता ही होगा जो अपने बच्चों के पास सुबह शाम बैठकर उनको सही नेतृत्व देकर अपनी विरासत से जोड़ने के लिए प्रयत्नशील होगा। जो माता-पिता अपने बच्चों को सद् शिक्षा देकर अपनी विरासत से जोड़ने तथा नशे जैसे घातक प्रभाव से परिचित करवाकर उनको अच्छी शिक्षा देते हैं उनको सफलता भी अवश्य मिली तथा मिलती है। जो माता-पिता अपने कर्त्तव्यों की ओर से लापरवाही करते हैं उनके बच्चे अधिकतर बुरी संगत में पड़कर नशे की बुरी लत के शिकार हो जाते हैं। कई बार माता-पिता यह बहाना ही लगाते हैं कि बच्चों के पास बैठने के लिए हमारे पास समय नहीं है। संसार की व्यस्तता इस प्रकार की है कि इसमें से अवश्य कार्य के लिए समय निकालना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर बच्चे के जन्म से लेकर जब तक वह स्व-आश्रित नहीं हो जाता, माता-पिता पूरा समय निकालकर उसकी परवरिश भी करते हैं तथा उसकी सभी ज़िम्मेदारियां भी निभाते हैं। जब बच्चे को स्कूल पढ़ने के लिए भेजा जाता है उसको तैयार करने के लिए उसको स्कूल छोड़ने के लिए तथा पुनः उसको स्कूल से वापिस घर लाने के लिए माता-पिता समय निकालते हैं। बच्चे को ट्यूशन पढ़ाने के लिए ले-जाने के लिए तथा स्कूल ग्राऊंड में खेलने के लिए माता-पिता के पास समय है परन्तु धार्मिक संस्कार देने के लिए, बच्चों को अपनी विरासत से जोड़ने के लिए कुसंगति तथा नशे आदि के बुरे प्रभाव दर्शाने के लिए

माता-पिता के पास कोई समय नहीं निकल रहा, जिसके कारण बच्चे अच्छे संस्कारों के बीज से वंचित रह जाते हैं। जो कार्टून तथा टी.वी. के संस्कारी बीज उनके दिल में पड़ते हैं समय पाकर टेलीविज़न के संस्कारी बीज़ ही बच्चे की बनने वाली ज़िन्दगी बनाने का कारण बनते हैं। टेलीविज़न के दृश्य तथा फिल्मी कहानियों के बारे में हमें पता ही है। इसलिए आज आवश्यकता है अपने बच्चों को स्वयं संभालने की।

यदि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को भुलाकर धार्मिक संस्थाओं की ओर देखेंगे तथा प्रचारकों पर अपने बच्चों को संभालने की ज़िम्मेदारी डालेंगे तथा उन पर दोष आरोपित करेंगे यह हमारी नादानी तथा ना-समझी की निशानी होगी। हमें अपने बच्चों को स्वयं ही संभालना पड़ेगा। जिस दिन भी हमने स्वयं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए अपने विरसे से जोड़ने के लिए समय निकालना आरम्भ कर दिया परिणाम अपने आप सार्थक होकर हमारे सामने आ जाना है। यदि अपने बच्चों को सही दिशा देने के लिए हम दूसरों की ओर झांकते रहे तथा उनको दोषी ठहराते रहे, फिर जो कुछ हो रहा है यह कुछ होता ही रहना है, इसको कोई रोक नहीं सकता। इसलिए आज आवश्यकता है स्वयं अपने बच्चों को गुरमति की दिशा देने के लिए अपनी विरासत से जोड़ने के लिए तथा नशे के बुरे प्रभावों से परिचित करवाने के लिए अवश्य समय निकालें, इसमें हमारा भी, बच्चों का भी तथा देश का भी भला होगा। यदि हम अपने कर्त्तव्य की ओर से मुँह मोड़कर रखेंगे तो आने वाली पीढ़ियां अपनी विरासत से बिलकुल टूट जायेंगी।

2. अध्यापकों की भूमिका तथा प्रचार की कमी

माता-पिता के सम्पर्क के पश्चात् बच्चों का सामना अध्यापकों से होता है। अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करके तथा अध्यापकों का रहन-सहन, बोल-चाल देखकर बच्चे के संस्कार बनते हैं। परन्तु अधिकतर अध्यापकों ने भी अपनी ज़िम्मेदारियों की ओर पूरी तरह मुँह मोड़ा हुआ है। अध्यापकों ने अपनी ड्यूटी को केवल अपनी रोज़ी-रोटी तक ही सीमित रखा है या फिर वे स्वयं किसी-न-किसी नशे की आदत का शिकार हुए होते हैं। जिस कारण न तो वे बच्चों को नशे के बुरे प्रभाव बताकर इनसे बचने के लिए प्रेरणा देते हैं तथा न ही उनकी आत्मा नशों को बुरा कहने का साहस करती है क्योंकि वे स्वयं नशों की गुलामी

कबूल कर चुके होते हैं। यदि वे साहस करके अथवा विवशतापूर्वक नशों के बुरे प्रभाव का सबक बच्चों को बताएं भी तब भी उनके दिए हुए सदाचारी उपदेश का प्रभाव बच्चे नहीं कबूल करते। प्रभाव तो उस मनुष्य के कहने का होता है जो श्री गुरु अर्जुन देव जी के कथन अनुसार, **"प्रथमे मनु परबोधे अपना पाछै अवर रीझावै॥ रागु आसा म: ५ (पृष्ठ ३८१)"** का धारणी होगा। जो स्वयं ही सदाचारी मूल्यों से गिरे **"अवर उपदेसै आपि न करै (पृष्ठ २६९)"** का कार्य करता है। उसके कहने का थोड़ा-सा भी प्रभाव नहीं होता। इसलिए आज कहनी-कथनी तथा सदाचारी गुणों के धारणी अध्यापकों की सेवाओं की बच्चों को अत्यन्त आवश्यकता है। अध्यापकों का ऊंचा-साफ सदाचारी जीवन न होने के कारण आज की होनहार बच्चों की कोंपलें सच्ची जीवन दिशा से वंचित होकर नशों की लपेट में आती जा रही है। इसलिए अध्यापकजनों को भी अपनी नैतिक ज़िम्मेदारियों का अहसास करके अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाना चाहिए। इसमें ही उनका अपना तथा बच्चों का कल्याण है।

3. धार्मिक स्थान तथा धार्मिक रुचि का त्याग

आज जब हम आधुनिक सिक्ख पीढ़ी की ओर देखते हैं तो उनके मुँह से ऐसे शब्द सुनने को मिलते हैं कि मनुष्य का जीवन आदर्शमय होना चाहिए, गुरुद्वारे जाने की भी क्या आवश्यकता है ? यह तो इस प्रकार की बात है जिस प्रकार कोई मनुष्य किसी बच्चे को शिक्षा दे कि पुत्र ! ऊंची डिग्री प्राप्त करनी चाहिए पर स्कूल जाने की क्या आवश्यकता है ? परन्तु ऐसी विपरीत शिक्षा देने वाले को यह नहीं पता कि स्कूल जाने पर ही ऊंची विद्या तथा ऊंची डिग्रियां मिलती हैं। गुरुद्वारे न जाने के लिए दूसरा बहाना बनाया जाता है कि गुरुद्वारों में लड़ाई-झगड़े होते हैं इस कारण हम बच्चों को गुरुद्वारे नहीं ले जाते। हमारे बच्चों पर लड़ाई झगड़े का बुरा प्रभाव पड़ता है। यह भी एक मनघड़ंत बहाना है। गुरुद्वारों में तो कई वर्षों बाद कुछ बुद्धिहीन, अहंकारी लोग लड़ाई झगड़ा करते होंगे। कोई गुरु के भय वाला सिक्ख गुरु की हजूरी में ऊंचा बोल भी नहीं सकता उसने झगड़ा तो क्या करना है। परन्तु फिर भी यदि उनकी दलील मान ली जाये तो क्या हमारे घरों में पति-पत्नी का, सास-बहू का, पिता-पुत्र का झगड़ा नहीं होता ? क्या पार्टी हॉलों में लड़ाई झगड़े नहीं होते ? क्या सिनेमा हॉलों में बने हुए गैंग लाठियां नहीं

चलाते? क्या स्कूल कॉलेजों में बच्चे नहीं लड़ते।

कौन-सा स्थान है जहां झगड़ा नहीं होता, फिर भी क्या हमने पार्टी हॉलों में जाना छोड़ दिया है ? सिनेमा हॉलों का त्याग कर दिया है ? क्या घरों को तिलांजलि देने को तैयार हैं ? क्या बच्चों को लड़ाई झगड़े का बहाना बनाकर हमने पढ़ाई करने से रोककर घरों में बैठा लिया है ? कदाचित् नहीं। केवल गुरु घर आप न जाने के लिए तथा बच्चों को न लेकर जाने के लिए ही हम ऐसे बहाने बनाते हैं, जो हमारे लिए हानिकारक हैं। हमें गुरु घर स्वयं जाना चाहिए तथा अपने बच्चों को अवश्य लेकर जाना चाहिए। बच्चों को उनके प्रश्नों के योग्य उत्तर देकर सन्तुष्ट करना चाहिए कि गुरुबाणी, गुरमति तथा किसी के साथ झगड़ा करने के लिए आज्ञा नहीं देते, गुरमति तो **"सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन॥ धनासरी मः ५ (पृष्ठ ६७१)"** बनकर **"एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥ सोरठि मः ५॥ (पृष्ठ ६११)"** का उपदेश देती है। झगड़ा करने वाले गुरु उपदेश से कोरे, शरारती लोग हैं, चाहे वेष उन्होंने कोई भी धारण किया है परन्तु वास्तविकता से तो कोसों दूर है। दूसरे जब भी गुरुद्वारे अथवा किसी भी धार्मिक स्थान पर जाना हो शहद की मक्खी के स्वभाव को धारण करके जाना चाहिए। शहद की मक्खी तो ज़हरीले अक्क तथा धतूरे के फूल में से भी मिठास का कण निकाल लाती है। गुरु घर जाते हुए चींटी की वृत्ति त्यागकर जाने में ही भला है, क्योंकि चींटी का स्वभाव है उसने संगमरमर के लगे हुए आलीशान फर्श में भी दरार ही ढूँढ़ती है। यदि गुरु घर चींटी की वृत्ति लेकर जायेंगे फिर लाभ प्राप्त नहीं होना। वहां तो श्री गुरु अमरदास जी के वचन **"साझ करीजै गुणह केरी छोड़ अवगण चलीए। रागु सूही मः १ (पृष्ठ ७६६)"** के धारणी बनने के लिए जाना है क्योंकि धार्मिक स्थानों से ही हमें सदाचारी गुण आदर्शमय जीवन की शिक्षा तथा **"झूठा मदु मुलि न पीचई जे का पारि बसाई॥ सलोक मः ४११ (पृष्ठ ५५४)** की सच्चाई तथा **इतु मदि पीतै नानका बहुते खटिअहि बिकार॥ सलोक मः ४ (पृष्ठ ५५३)"** की शिक्षा मिलनी है। यदि हम शहद की मक्खी की वृत्ति बनाकर श्रेष्ठ गुरु शिक्षा के स्वयं तथा अपने बच्चों को धारणी बना लिया समझो हमने अपना सब कुछ ही बचा लिया।

4. प्रचार की कमी

आज मीडीया का युग चल रहा है। मीडीया द्वारा प्रचार करके मिट्टी को सोना करके बेचा जा सकता है तथा सोने को मिट्टी बताकर कौड़ियों के भाव व्यर्थ में गंवाया जा सकता है। प्रचार साधनों द्वारा ज़हर को अमृत बताकर लोगों को पिलाया जा सकता है तथा इसी प्रचार साधनों द्वारा अमृत को ज़हर बताकर अमृत के प्रति घृणा पैदा की जा सकती है। आज नशा बेचने वाली कम्पनियां अरबों खरबों रुपये खर्च करके प्रचार साधनों द्वारा कई प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा, कभी जाने माने खिलाड़ियों को मुँह मांगे पैसे देकर उनके द्वारा ज़हर रूपी नशों को मनोबल ऊंचा करने वाले, शरीर को चुस्त करने वाले तथा गगन मण्डल की उड़ने दिलाने वाले बताकर लोगों के साथ दगा कर रहे हैं। दूसरी ओर नशों की हानियां बताने के लिए नशों के शरीर तथा आत्मा पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव से परिचित करवाने के लिए नाम-मात्र ही प्रचार हो रहा है। जिसके कारण लोग धड़ाधड़ नशों की दलदल में फँसकर अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं।

चाहे आज समूचा विश्व नशों के प्रति चिन्तित होकर लोगों को नशों के घातक प्रभाव से परिचित करवाने के लिए 31 मई को तम्बाकू निषेध दिवस (No Smoking Day) तथा 26 जून को नशा विरोधी दिवस मनाता है। इन दिनों विचार गोष्ठियां भी तथा नशा छोड़ने के लिए अपीलें भी की जाती हैं परन्तु ये सम्पूर्ण कार्यवाही चार दीवारी के अन्दर तथा समाचार-पत्रों में तस्वीरें तथा समाचार प्रकाशित करने तक ही सीमित रह जाती है।

देखने में आया है आज लोग अपने स्वास्थ्य प्रति बड़े चौकन्ने हो गये हैं। जो लोग धड़ाधड़ नशों की दलदल में फँसते जा रहे हैं यदि उन लोगों को नशों से शरीर को तथा आत्मा को होने वाले नुकसान की सही तस्वीर दिखाई जाये तो नशाखोर लोग तुरन्त स्वास्थ्य को खराब करने वाले नशों का त्याग करने में ढील नहीं करेंगे। आवश्यकता केवल सच्चे दिल से धैर्य से प्रचार करने की ही है। प्रचार में बहुत शक्ति है। मैंने एक दो घटनाएं जो पिछले कुछ वर्षों में घटित हुईं उनकी ओर ध्यान दिलवा कर प्रचार शक्ति बारे परिचित करवाना है। पिछले एक दशक से जब सॉफ्ट ड्रिंक (कोक स्प्राईट आदि) तैयार करने वाली कम्पनियां हमारे देश में आईं, सॉफ्ट ड्रिंक बहुत ही लोकप्रिय बन गया। लोगों में अन्य सॉफ्ट

ड्रिंक की मांग इतनी बढ़ गई कि हिन्दुस्तान के लोगों की मांग इन कम्पनियों द्वारा पूरी न हुई। पिछले वर्षों में खाद्य विभाग के अधिकारियों ने जब कोक बनाने वाले पानी के सैम्पल टैस्ट किये तो कोक वाले पानी में पानी को साफ करने वाली कीटनाशक दवाईयों की मात्रा कुछ अधिक पाई गई। मामला संसद में पहुँचा। अगले दिन ही देश के सभी समाचार-पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में समाचार छापे गये कि कोक के पानी में कीटनाशक दवाईयों की मात्रा नियमित अनुपात से अधिक है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है तथा साथ ही संसद की कंटीन में से कोक की बोतलें उठवा दीं। इतना समाचार पढ़ते ही सारे हिन्दुस्तान के लोगों ने कोक पीना बन्द कर दिया, सादा पानी अथवा शिकंजवी पीकर तथा पिला-पिलाकर लोग प्रसन्न रहे। अपने व्यापार को जारी रखने के लिए कम्पनी वालों ने कोक के रेट भी आधे कर दिये, समाचार-पत्रों द्वारा भी प्रचार किया कि कोक में कीटनाशक दवाईयों की मात्रा बिल्कुल सही हो गई है परन्तु कोई पीने को तैयार न हुआ। कम्पनियों को अरबों रुपये का घाटा पड़ा।

इसी प्रकार की घटना पोल्ट्रीफार्म वालों के साथ हुई। पोलट्रीफार्म के चूज़ों को फ्लू की बीमारी हो गई। जिन-जिन ने बीमार मुर्गों का मांस खाया उनको भी मुर्गियों की बीमारी लग गई। दो-चार मौतें भी हुईं। पुनः मीडीया ने बात उठाई। टेलीविज़न, समाचार-पत्रों द्वारा Bird Flue के समाचार प्रकाशित हुए। लोगों ने मांस खाना छोड़ दिया। जो मुर्गे का मांस 65 रुपये किलो बिकता था उसको कोई 10 रुपये किलो भी लेने को तैयार नहीं था। पोल्ट्रीफार्मों का धन्धा बन्द होने की कगार पर आ गया। मरता क्या न करता की कहावत अनुसार पोल्ट्री मालिकों ने पैसा एकत्रित किया, खाद्य विभाग के डॉक्टरों के पास से क्लीन चिट लेने के लिए, समाचार-पत्रों में विज्ञापन लगाये, समाचार छपवाये। पुनः उनका व्यापार चल पड़ा। ऊपर जो दो घटनाएं लिखी हैं इनको लिखने से मेरा अभिप्राय है कि प्रचार साधनों (टी. वी., इन्टरनैट, रेडियो, समाचार-पत्र, मैगज़ीन) द्वारा नशों के बुरे प्रभावों की तस्वीर लोगों के सामने रख दी तो कोई ऐसा कारण नहीं कि लोग नशों के घातक प्रभाव से सचेत होकर इनका त्याग न करें, ज़रूर कर देंगे। कमी केवल सच्चे दिल से दृढ़ इच्छा के साथ चलने की तथा प्रचार की ही है। आज जो प्रचार हो रहा है वह भी व्यापार ही हो गया है। कुछ एक समाज-सेवी संस्थाएं

अथवा सदाचारी दिलों को छोड़कर शेष केवल अपनी प्रसिद्धि तथा धन एकत्रित करने अथवा ऊंचा पद प्राप्त करने का साधन ही बन गया है। जो सच्चे दिल से नशों के बुरे प्रभाव दिखाकर लोगों को सचेत करने के हित में प्रचार करते भी हैं वे केवल आटे में नमक मात्र ही हैं, जो नशों के बारे में किये जा रहे बुरे प्रचार के हक में हैं वे केवल तिनके की भान्ति हैं जिस के कारण सफलता नहीं मिल रही।

5. सरकार की ओर से नशों के प्रति लापरवाही

माता-पिता, अध्यापकों, प्रचार मीडीया, धार्मिक तथा समाज-सेवी संस्थाओं के पश्चात् सबसे अधिक ज़िम्मेदारी सरकार पर आती है क्योंकि सरकार के पास लोगों को सही रास्ता देने के लिए साधन उपलब्ध होते हैं तथा सरकार के पास समाज को सुधारने की क्षमता भी होती है। यदि सरकार सच्चे दिल से चाहे कि हमारे देश को नशा-रहित करना है तो सरकार की शक्ति के आगे समाज को भयभीत करने वाले नशों का भूत कभी भी टिक नहीं सकता, परन्तु सरकार अन्दर ही दोहरा मापदण्ड चल रहा है। सरकार लोगों की जान तथा भूमिका से अधिक शराब, तम्बाकू आदि की बिक्री-कर को प्राथमिकता दे रही है। कितनी हास्यास्पद बात बनी हुई है कि जिस तम्बाकू तथा शराब से आय-कर आता है उससे सात-आठ गुणा अधिक पैसा खर्च करके शराब, तम्बाकू तथा अन्य नशों से पैदा होने वाली बीमारियों का इलाज करवाया जाता है। कितनी अज्ञानता की बात है कि आय कर की खातिर पहले लोगों को तम्बाकू तथा शराब पिलाओ फिर इन नशों से पैदा होने वाली बीमारियों का इलाज करने के लिए सात आठ गुणा पैसे खर्च करो। कैसा है सरकार का जादू भरा नाटक जो दिन-ब-दिन लोगों को मूर्ख बना रहा है। यह सब जनता के स्वास्थ्य तथा मानसिकता से खिलवाड़ किया जा रहा है।

कई बार साधारण लोग सरकार को गालियां निकालते तथा सरकार पर अनेक दोष लगाकर अपना क्रोध शान्त करते हैं। यह केवल अपना मुँह गन्दा करने तथा मन का गुबार निकालने तक ही सीमित है। सरकार को बुरा-भला कहने से कुछ नहीं बनेगा। आप सबको पता ही है कि सरकार कोई आसमान से नहीं उतरी। सरकार उन लोगों के समूह का नाम है जिनको हम राजनीतिक लोग कहते हैं तथा

जिनको हमने स्वयं मतों द्वारा चुना है। जो साढ़े चार वर्ष तो राज-गद्दी पर बैठकर ऐश करते हैं तथा अपना घर भरते हैं, चुनाव से छ: महीने पहले पुन: आकर लोगों के दरवाज़ों पर दस्तक देते हैं तथा अनेक प्रकार के लोगों को सब्ज़बाग दिखाकर पैसे खर्च करके पुन: सत्ता संभाल लेते हैं तथा करते कुछ भी नहीं हैं। यह सिलसिला कोई आज से नहीं, आधी शताब्दी से ऊपर का चलता आ रहा है तथा चल रहा है तथा चलते जाना है। हमें और आपको सभी को पता है कि राजनीतिक लोग जो सत्ता संभालते हैं कुछ एक को छोड़कर अन्य के प्रति लोगों की राय है कि राजनीतिक लोगों का धर्म तथा जीवन लक्ष्य केवल और केवल सत्ता प्राप्ति ही होता है, राज्य सत्ता प्राप्त करने के लिए राजनीतिक लोगों को झूठ बोलना पड़े वे जी-भरकर बोलते हैं, पैसे खर्च करने पड़े, झूठे वायदे करने पड़े, नशे बांटने पड़ें, लड़ाई-झगड़े, दंगे-फसाद करवाने पड़े, करवाने से संकोच नहीं करते। जिस कीमत पर भी राज्य सत्ता मिलती हो वह खरीदने के लिए तैयार है। प्रत्येक हथकंडे अपनाकर बनी सरकार के पास यदि हम लोक कल्याण के कार्यों तथा सदाचारी मूल्यों को लागू करवाने की आशा रखें तो शायद हम स्वप्न की दुनिया बसाते समझे जायेंगे। राजनीतिक लोग वही परोपकारी तथा सदाचारी कार्य करने को तैयार होगा जिसके द्वारा उसको राज्य-सत्ता की प्राप्ति की झलक दिखाई देती हो। जिस अच्छे कार्य को करने से राज्य सत्ता खतरे में पड़ने का डर हो ऐसा अच्छा, लोक-कल्याणकारी कार्य राजनीतिक मनुष्य कदाचित् नहीं करता। जिन-जिन देशों की सरकारों ने नशों के घातक फैलाव को रोकने के लिए सच्चे दिल से प्रयत्न किये हैं उनको सफलता भी मिली है तथा देश भी समृद्ध हुआ है। हमारे देश की सरकार को भी नशों के घातक प्रभाव से लोगों को जागृत करने के लिए तथा नशों के चल रहे बहाव को रोकने के लिए कठोर तथा सार्थक उपाय करने चाहिए। इलैक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडीया तथा नशों के विज्ञापनों पर रोक लगाने के लिए सरकार संसद में बिल पास करवाये। यदि कोई उचित उपाय न किया तो आने वाले समय में एटम नहीं नशे ही देश को नष्ट करने का कारण बनेगें। बड़ी दीर्घ दृष्टि से सोचने तथा विचार करने की आवश्यकता है।

अब क्या किया जाये ?

विश्व में कोई भी कार्य ऐसा नहीं जो किया न जा सकता हो। कोई ऐसी कठिनाई नहीं जिसको हल न किया जा सकता हो। कई बार कई कार्य तथा समस्याएं इतनी जटिल हो जाती हैं कि उन कार्यों को सिरे चढ़ाने के लिए तथा समस्याओं को हल करने के लिए साधारण कार्यों से अधिक प्रयत्न करने पड़ते हैं, अधिक शक्ति तथा अधिक समय खर्च करना पड़ता है। परन्तु कोई भी कार्य असम्भव नहीं। आवश्यकता धैर्य छोड़ने की नहीं बल्कि आवश्यकता है सहजता से साहस जुटाने की। आज समय किसी को भी दोषी ठहराकर बुरा-भला कहने का नहीं, कौम को जो क्षति हो चुकी है अथवा हो रही तथा जिसके और अधिक गम्भीर परिणाम निकलने वाले हैं इस बिगड़े हुए ताने-बाने को मिल-जुलकर बैठकर हल करने की आवश्यकता है। यदि इकाई से लेकर ग्रामीण स्तर तक तथा ग्रामीण स्तर से लेकर क्षेत्रीय स्तर तक हम सभी नशे के घातक दैत्य को बाहर निकालने के लिए धैर्यता से लग जायें तो वर्षों का कार्य महीनों में हो सकता है तथा थोड़े समय में ही सारा समाज नशा-मुक्त हो सकता है, परन्तु यह कार्य बातों से या समाचार-पत्रों में समाचार प्रकाशित करने से नहीं होना कुछ करके तथा दिखलाने के लिए साहस करना पड़ेगा। क्या कुछ करने की आवश्यकता है संक्षेप में करने का प्रयत्न करें।

1. सबसे पहले प्रत्येक नगर निवासी स्वयं अपने अपने ग्रामों में पांच-सात बुद्धिमान सुहृदय मनुष्यों की एक कमेटी बनाएं जिसमें कुछ नौजवान ही लिये जायें। वे सारे नगर के घरों में जाकर समूचे गाँवों के निवासियों को किसी एक दिन एक सांझे स्थान पर एकत्रित होने के लिए प्रार्थना करें तथा उस निश्चित दिन उस इकट्ठ में सभी को वर्तमान स्थिति बारे परिचित करवाकर नशों तथा हो रही सामाजिक बुराईयों से छुटकारा पाने के लिए सबसे सुझाव लिये जायें। अच्छे सार्थक सुझावों पर विचार करके उन पर पहरा देने के लिए सभी को वचनबद्ध किया जाये तथा कम-से-कम प्रत्येक माह में सम्पूर्ण नगर को पुनः एकत्रित करके पिछले माह की वचनबद्धता तथा बीते समय का लेखा-जोखा बड़ी सद्भावना वाले वातावरण में किया जाये तथा पिछले समय में जो कमियां पेश आई हैं उनको आने वाले समय में दूर किया जाये। ऐसे नौजवानों तथा बुद्धिमान मनुष्यों में

लगातार तालमेल बनाये रखा जाये। जो कठिनाईयां इस कार्य को सिरे चढ़ाने में आ रही हों उनको आपसी विचार करके, हल करने के प्रयत्न जारी रखे जायें। इस प्रकार करने से काफी सफलता मिलने की आशा है।

2. ग्रामीण स्तर के इकट्ठ में नौजवानों की सहमति से ग्राम स्तर पर शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए खेल क्लबों तथा व्यायाम घरों का प्रबन्ध किया जाये तथा फण्ड एकत्रित करके नौजवानों को शारीरिक व्यायाम करने के लिए आवश्यक साज़ो-सामान का प्रबन्ध करके दिया जाये। इस सम्पूर्ण प्रबन्ध की देखभाल की ज़िम्मेदारी किसी समझदार नौजवान को सौंपी जाये।

3. ग्राम स्तर के स्पोर्टस क्लब तथा व्यायाम घरों के अतिरिक्त गांव में एक सुन्दर लाइब्रेरी बनाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। इस लाइब्रेरी के नियमों में समाचार-पत्रों के अतिरिक्त सदाचारी धार्मिक तथा ऐतिहासिक पुस्तकें ही खरीदकर उपस्थित करने की आज्ञा नियमित करनी चाहिए। नगर के सभी पढ़े-लिखे नौजवानों को लाइब्रेरी में उपस्थित साहित्य पढ़ने के लिए उत्साहित करना चाहिए। धार्मिक तथा सदाचारी विषय पर छोटे-छोटे ट्रैक्ट उपलब्ध करवाकर जहां लाइब्रेरी में रखने चाहिएं वहीं छोटे बच्चों की ड्यूटी लगाकर गांव के सभी घरों में बांटने का प्रयत्न करना चाहिए।

4. गांव के प्रत्येक गुरुद्वारे में सुबह शाम नित-नेम की परम्परा जारी की जाये तथा कुछ समय श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बाणी की विचार कथा द्वारा संगतों को अवश्य श्रवण करवाया जाये, शाम के समय यदि कथा का प्रबन्ध न हो सके तो किसी गुरमुख लेखक की ओर से लिखा हुआ गुरु इतिहास अथवा किसी गुरमुख की जीवनी कुछ समय पढ़कर अवश्य सुनाई जाये, प्रतिदिन गुरमति विचार तथा गुरु इतिहास सुनकर मन में अच्छे संस्कार प्रगट हो जाने की आशा है।

5. सभी की सहमति से महीने में दो दिन, रविवार तथा अन्य किसी दिन नौजवानों को एकत्रित करके उनके जीवन की कठिनाईयों तथा उनके मन की शंकाओं को सुनकर, नगर के बुद्धिमान् पुरुष अथवा किसी योग्य व्यक्ति को बाहर से बुलाकर नौजवानों की ओर से दर्शाई कठिनाईयों का योग्य हल ढूंढा जाये तथा उनके सन्देहों के उत्तर देकर उनको सन्तुष्ट किया जाये। इस प्रकार करने से जहां नौजवानों की कठिनाईयों का हल निकलेगा वहीं उनकी शंकाओं के उत्तर मिलने से उनकी सन्तुष्टि हो जायेगी। इस प्रकार वृद्धावस्था तथा नवयौवन का परस्पर तालमेल बढ़कर जीवन को ऊंचा ले जाने के लिए उचित रास्ता प्राप्त होगा।

6. नशे में फंस चुके नौजवानों के पास सुहृदयता से जाकर उनको प्रेरणा देकर उनकी उचित कठिनाईयां सुनकर उनसे अपनी सहानुभूति प्रकट करके उनको योग्य नेतृत्व देने का तथा दवा-दारू का प्रबन्ध करने में सहायता करनी चाहिए।

7. प्रत्येक माता-पिता को अपने बच्चों के पास पन्द्रह-बीस मिनट का समय अपने पास बिठाकर उनको गुरुवाणी में बताये गुरु उपदेश तथा अपने गौरवमयी इतिहास प्रति परिचित करवाना चाहिए। बुरी संगत के प्रभाव सोदाहरण समझाने चाहिएं। जो बच्चे प्रश्न करें उनको बड़े धैर्य से प्रश्न सुनकर उत्तर देकर उनकी सन्तुष्टि करनी चाहिए। इस प्रकार प्रतिदिन की शिक्षा बच्चों के अच्छे संस्कार बनाने में बहुत सहायक होगी।

8. अध्यापक गणों को भी विद्यार्थियों प्रति अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी समझकर, उनको केवल हिसाब-इतिहास पढ़ाने तक ही अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझनी चाहिए बल्कि उनको प्रत्येक बुराई से बचकर नया निरोग्य, नशा-रहित तथा सामाजिक बुराईयों से रहित समाज की सृजना के लिए नेतृत्व देना चाहिए। अध्यापक गणों से बच्चों ने जीवन की दिशा प्राप्त करनी है इसलिए उनको स्वयं अपना आदर्श जीवन बनाना चाहिए। यदि कोई अध्यापक अपने जीवन के अन्दर समाज में गिरावट लाने वाला कार्य करता है अथवा नशों का सेवन करता है, तो प्रिंसिपल साहिब तथा स्कूल के प्रबन्धकीय सज्जनों को उस अध्यापक के साथ प्यार तथा कठोरता के दोनों हथियार प्रयोग करके शिष्टाचार वाला जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित तथा विवश करना चाहिए। नियम तथा शिष्टाचार के साथ किसी कीमत पर समझौता न किया जाये।

9. समाज-सेवी तथा लोक हित संगठन बड़े सुन्दर तथा सार्थक उपाय कर रहें हैं। इन सभी संगठन को भी संगठित तौर पर योजनाबद्ध ढंग से एकत्रित करके एक साथ प्रयास करना चाहिए। गांवों में प्रोग्राम बनाकर सामाजिक बुराईयों तथा नशा विरोधी फिल्में तैयार करवाकर नौजवानों को दिखानी चाहिए तथा साथ ही अच्छे बुद्धिमान नौजवानों द्वारा भाषण दिलाकर गांवों में नशों के घातक प्रभाव से तथा समाज में आ रही बुराई से जागृत करवाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयत्नशील होना चाहिए।

10. बुद्धिमान् विद्वान् बुद्धिजीवी वर्ग जिनको परमात्मा ने विशेष बुद्धि तथा अक्ल प्रदान की है उनको ऊंचे स्तर पर समाचार-पत्रों तथा मैगज़ीनों में नशों के बुरे प्रभाव बताकर आधुनिक नौजवानी को जागृत करने के हित में ज़ोर लगाना

चाहिए। जीवन के सही रास्ते से भूले हुए नौजवानों के प्रश्न जानकर उनके ठोस उत्तर देकर उनको सही जीवन जीने के लिए प्रेरणा देनी चाहिए। जिन विद्वानों को प्रभु ने स्टेज़ पर सुन्दर भाषण देने की कला प्रदान की है उनको धार्मिक तथा पब्लिक स्टेजों पर ज़रूर नशे के घातक प्रभाव लोगों को बताकर अपनी दूरदर्शिता का प्रयोग करने से संकोच नहीं करना चाहिए।

11. जिनको परमात्मा ने धन के खुले भण्डार दिये हैं परन्तु वे लिख नहीं सकते तथा न ही पब्लिक तथा धार्मिक स्टेजों पर भाषण दे सकते हैं, ऐसे धनी पुरुषों को चाहिए कि वे अपने धन की सफलता के लिए बड़ी मात्रा में नशा तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध साहित्य छपाकर बांटने का कष्ट करें। इस प्रकार समाज सुधार के कार्यों में उनकी दौलत भी सफल हो जायेगी। जो मनुष्य न स्टेज पर बोल सकता है तथा न लिख सकता है तथा न ही पैसे खर्च कर सकता है वह अपने तन को सफल करने के लिए छपा हुआ साहित्य घरों-घरों में पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हो। इस प्रकार मिल-जुलकर प्रयास करके ही यह कार्य पूर्ण करना है क्योंकि नशों के प्रभाव में अमीर तथा गरीब के, पढ़े-लिखे विद्वान के, समाज-सेवी तथा धार्मिक रुचि रखने वाले सभी वर्गों से संबंधित मनुष्यों के बच्चे प्रभावित हो रहे हैं। ये जो नशों की महामारी की बीमारी पड़ गई है तथा जिसका फैलाव बड़ी तीव्रता से हो रहा है यह महामारी का मुकाबला यदि सभी ने सामूहिक रूप में न किया तो आने वाले समय में इस नशे की महामारी का समाज तथा देश को सबसे बड़ा खतरा है।

12. आजकल प्रचार का युग चल रहा है। टी. वी., समाचार-पत्र, फिल्में, इन्टरनैट तथा अन्य मीडीया साधन में बहुत बड़ी शक्ति है। प्रचार द्वारा सत्य को झूठ तथा झूठ को सत्य बनाया जा सकता है। सोने को राख तथा मिट्टी को सोना प्रचार करके राख से सोने का मूल्य प्राप्त किया जा सकता है। प्रचार साधनों द्वारा पैसे वाली कम्पनियां धन खर्च करके हमारे सामने ऐसा करके दिखा रही हैं। यदि कहीं प्रचार साधनों के मालिक थोड़ी-सी कुर्बानी करें, लोगों के कल्याण के लिए नशों के बुरे प्रभावों की सच्ची तथा सही तस्वीर प्रतिदिन ही लोगों के सामने रखने लग जायें तो वह दिन बिल्कुल दूर नहीं जिस दिन समूचा देश नशों के घातक प्रभाव से बचकर एक सच्चा नशा-रहित समाज बनाने में सफल हो जायेगा। नौजवान तथा सम्पूर्ण देश इस प्रचार मीडीया के अहसान को सदा याद रखेगा।

13. लोग देश तथा समाज का सही प्रबन्ध चलाने के लिए सरकार को चुनते

हैं। सरकारों का भी कर्त्तव्य बनता है कि निजी हित से ऊपर उठकर वे लोक हितों तथा देश के हितों को प्राथमिकता दें। लोक हित के लिए जो न्यायपालिकाओं ने आदेश दिये हैं उनको कठोरता से लागू करें। यदि आदेशों को लागू करने में रुकावट बनते हैं उनके साथ कठोरता से पेश आया जाये, क्योंकि सरकारों के पास साधन तथा शक्ति दोनों चीज़ें हैं। जहां दोनों चीज़ें हों वहां हर असंभव को संभव किया जा सकता है, यदि हमारे देश की सरकार ही लोक हितों को मुख्य रखकर नशों की बिक्री, नशों के प्रचार तथा नशों के व्यापार पर कठोरता से नियमों को लागू कर दे तो महीने नहीं दिनों में ही सुधार आ जाने की आशा की जा सकती है।

14. कई बार मनुष्य के जीवन में ऐसा समय आ जाता है जहां मनुष्य को न परिवार न समाज तथा न ही सरकार सहायक होती है। वहीं मनुष्य अपना बल हारकर प्रभु परायण होकर गुरु चरणों में फरियादी होता है। जैसे कि बाबा फरीद जी ने गुरबाणी में फरमाया है **"ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी"** जब सच्चे दिल से गुरु के आगे स्वयं को समर्पित करके अरदास की जाती है, वह अरदास प्रभु दर पर परवान होकर मनुष्य की आशाएं, इच्छाएं पूरी कर देती है। आज ऐसा समय चल रहा है नौजवानी को कुमार्ग पर पड़ने से बचाने के लिए न परिवार न समाज तथा न ही सरकार सहायक हो रही है तथा न ही होने की आशा है। सभी के वश से बाहर की बात बन गई है। हमारे पास यदि इस समय कोई आशा की किरण है, तो वह है अरदास, गुरु चरणों में अरदास, भीरु-भावना से प्रतिदिन अपने तथा संसार के भले के लिए करें अरदास

मै ताण दीबाणु तू है मेरे सुआमी मै तुधु आगे अरदासि॥
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बनती
मेरा दुख सुखु तुझ ही पासि॥

सूही म: ४११ (पृष्ठ ७३५)

इसलिए दाता कृपा करके

जगतु जलंदा रखि लै आपनी किरपा धारि॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि॥

सलोक म: ३ (पृष्ठ ८५३)

किरत करो

परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को शरीर दिया है। शरीर की तीन आवश्यकताएं हैं जिनको [१]कुली, गुली, जुली का नाम दिया है। ये तीनों धन द्वारा पूरी होती हैं। धन की प्राप्ति के लिए किरत[२] करनी अनिवार्य है। जो मनुष्य किरत नहीं करेगा उसको इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए या तो चोरी चकारी करनी पड़ेगी या फिर किसी के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा। ये दोनों कर्म ही समाज में तथा गुरमति में वर्जित हैं। श्री गुरु नानक देव जी की दृष्टि में चोरी दगा करने वाला चाहे सुन्दर सुरूप हो चाहे अच्छी बुद्धिमत्ता का मालिक हो, परन्तु चोरी चकारी का बुरा कर्म करने के कारण उसको प्रत्येक स्थान पर बुरा ही कहा जाता है, उसका संसार में तथा निरंकार की दरगाह में दो कौड़ियों का भाव नहीं पड़ता। चोरी चकारी करने वाले मनुष्य की न तो इस संसार में कोई गवाही भरता है तथा न ही गुरु उसकी दरगाह में गवाही देता है। सतगुरु का फ़रमान है–

चोर सुआलिउ चोरु सिआणा॥ खोटे का मुलु एकु दुगाणा॥
चोर की हामा भरे न कोइ चोरु कीआ चंगा किउ होइ॥

धनासरी म: २ (पृष्ठ ६६२)

अपने शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने को भी गुरमति ने कबूल नहीं किया। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में बाबा फरीद जी का बड़ा सुन्दर फरमान है। आप अरदास करते हैं कि हे अल्लाह ताला ! आप मुझे अपने शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी का मोहताज न करना। जिस दिन मुझे किसी के द्वार पर जाकर हाथ फैलाना पड़ जाये उस दिन तू मेरे शरीर में से आत्मा ही निकाल लेना। किसी से मांगने के स्थान पर मुझे मौत ही अच्छी है।

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साई मुझे न देहि॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि॥

सलोक फरीद (पृष्ठ १३८०)

---

१. रोटी, कपड़ा और मकान २. कर्म।

जो फकीरी वेष धारण करके खाली घूमकर घरों-घरों में मांगते स्वयं को गुरु बताते हैं सतगुरु जी ने यहां उनको लानत दी है, वह दुनिया को उनकी गुलामी करने से कठोरता से वर्जित है।

गुरु पीरु सदाए मंगण जाए॥ ताकै मूलि न लगीए पाइ॥

सलोक म: १ (पृष्ठ १२४५)

सतगुरु गुरु नानक देव जी ने किरती लालो की रूखी-सूखी रोटी को मलिक भागो की पूरियों से अधिक महानता दी। सतगुरु जी ने पूरे संसार को किरत करने का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि स्वयं सुल्तानपुर दौलत खां के मोदीखाने में नौकरी करके किरत करने की शिक्षा दी **"बाबे तारे चार चक नौ खण्ड पृथ्वी सचा ढोआ"** का कर्म करने के उपरान्त भाई गुरदास जी के फ़रमान अनुसार, **"फिर बाबा आया करतारपुर भेष उदासी सगल उतारा॥ पहर संसारी कपड़े मंजी बैठ किया अवतारा॥ .... सोदर आरती गावीयै अमृत वेले जाप उचारा॥"** ***वार 1, पौड़ी 38***

की कार करके मानवीय जीवन का टाईम-टेबल दर्शाकर स्वयं उस पर अमल करके दिखाया। करतारपुर की धरती पर सारी संगत धर्मशाला में ब्रह्म मुहुर्त में जुड़ी, प्रभु चिन्तन करके सारी संगत जपुजी साहिब का पाठ करती। सारा दिन खेतों में हल जोत कर, धान लगाकर, गेहूँ बीजकर, फसल को पानी देने के कार्य किये जाते। शाम को पुन: स्नान करके सारी संगत मन की स्वच्छता के लिए सोदर तथा आरती का कीर्तन करती तथा सुनती, किरत कमाई की फसल के साथ लंगर चलते, जहां प्रत्येक भूखे ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी होती। सतगुरु नानक देव जी ने जो व्यावहारिक जीवन जीकर दर्शाया तथा प्रचार किया, आज हम उससे कोसों दूर भाग रहे हैं जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य के जीवन में दिन-ब-दिन परेशानियां बढ़ रही हैं। इन परेशानियों के कष्ट से अपनी मानसिकता को मुक्त करने के लिए मनुष्य नशों का सहारा लेने लग पड़ा है जो बिल्कुल ही सुखी जीवन के विपरीत रास्ता है। आज आवश्यकता है भाई गुरदास जी के वचनों से दिशा लेकर **"किरत विरत कर धर्म की हथहु दे के भला मनावै।।"** के नियम को वास्तविक पहरावा पहनायें। फिर हम नशों के घातक दैत्य से भी बच जायेंगे तथा सुखी तथा सुविधापूर्ण जीवन का भी आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

वंड छको

परमेश्वर ने संसार को एक परिवार की तरह बनाया है। जिसके अन्दर अपनी-अपनी प्रारब्ध अनुसार किसी पास कम धन है, किसी के पास अधिक। जैसे हम नित्य जीवन में देखते हैं कि जिस परिवार के सभी जीव आपसी भ्रातृभाव से सांझेदारी डालकर एक-दूसरे की सहायता करके, एक-दूसरे की ऊंची-नीची बात सहकर परिवार में रहते हैं वे तो अपने घर को स्वर्ग बनाकर सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु जिस परिवार के जीव एक-दूसरे के साथ घृणा करके द्वैत का शिकार होकर परस्पर सहायता करने के स्थान पर एक-दूसरे की टांग खिंचाई करने में लग जाते हैं। उस घर में सब कुछ होते हुए भी, उस घर के जीव नरक समान जीवन भोगते हैं। सतगुरु जी ने **"एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुरु हाई॥ सोरठि मः ५ (पृष्ठ ६११)"** का पाठ पढ़ाया है, ताकि हम सभी परस्पर भाईचारी सांझ बनाकर अपने से छोटे की सहायता करके समानता के साथ प्रेम बनाकर तथा अपने से बड़ों का आदर करके एक भ्रातृभाव का आनन्द प्राप्त कर सकें। ऐसा पारिवारिक भाईचारा बनाने के लिए देने की प्रवृत्ति बनाने की आवश्यकता है। देने की प्रवृत्ति बनाने के लिए बाँट के छकने का नियम अपनाना पड़ेगा। जिन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के इस सुनहरी नियम ''**घालि खाइ किछु हथहु देइ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ॥**'' *सलोक मः १ (पृष्ठ १२४५)*

को अपने जीवन में धारण कर लिया है उनको वास्तविक जीवन का आनन्द ही भिन्न आने लग पड़ा। वे तो चार-चार दिन के भूखे भी लंगर तैयार करके वंड छकने के लिए नगाड़े बजाकर आवाज़ें मारते थे। वंड छकने वाली पंक्ति में उनका शत्रु भी आकर बैठ जाये, उसको अपना परम मित्र जानकर लंगर छकाकर प्रसन्न होते थे-

देत अवाजा भूखा कोई॥ देग तिआर गुरु की होई॥
उस समें वैरी किम आवै॥ परम मीत सम तोहि छकावै॥

किरत कमाई करके दूसरों की आवश्यकताएं पूरी करने से एक न कहने

योग्य आनन्द प्राप्त होता है जो वंड छकने वाला ही अनुभव कर सकता है क्योंकि जिस ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी होती है, उसकी आत्मा से दूर अन्दर से ज़रूरत पूरी करने वाले के प्रति आशीष निकलती है, जो आत्मिक प्रसन्नता तथा आनन्द प्रदान करती है। दूसरी ओर वंड छकने से देने का स्वभाव परिपक्व होता है क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव देने का है जितनी देर मनुष्य की भी देने की वृत्ति नहीं बनती उतनी देर प्रभु के साथ जीवन की एकरूपता होनी कठिन है। प्रभु के स्वभाव बारे सतगुरु जी ने गुरबाणी में लिखा है ''**देदा दे लैदे थकि पाहि॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि॥**'' वह तो ''**वडा दाता तिल न तमाए**'' की बिरती का मालक है। *जपु जी (पृष्ठ ७)*

जो मनुष्य किरत करके वंड छकने की क्रिया को अपना लेता है धीरे-धीरे उसका भी देने का स्वभाव बन जाता है जो समय पाकर प्रभु में अभेदता के लिए सहायक होता है। भाई गुरदास जी ने भी गुरु चाली की प्रौढ़ता करके फ़रमाया है।

घालि खाइ सुकितु करै वडा होइ न आपु गणाए॥

और-**घालि खाइ किछु हथहु देह (सलोक मः १२४५)**

वंड छकने के लिए आवाज़ें वही मार सकता है जिसने श्री गुरु नानक देव जी के **"घालि खाइ किच्छु हथहु देइ"** के उपदेश को अपने जीवन में अपना लिया हो परन्तु आज तो खेल ही और बन गई है। मनुष्य देने से अधिक लेने में प्रसन्नता अनुभव करता है। बांटने के स्थान पर इकट्ठा करने को प्राथमिकता दे रहा है। **"घालि खाइ सेवा करै"** के स्थान पर अपनी सेवा करवाने में गर्व अनुभव करता है। सतगुरु जी ने **"गरीब का मुंह गुरु की गोलक"** फ़रमाया था परन्तु आज धनी का मुँह ही गुरु की गोलक बन गया है। ज़रूरतमंद भूखों के स्थान पर धनियों को और धनी बनाने की भावना दृढ़ होती जा रही है जो सही रास्ते से भटकने की निशानियां साकार हो रही हैं। आज मनमति का त्याग करके गुरमति नियमों के धारणी बनने की अत्यन्त आवश्यकता है।

नाम जपो

संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। सुख की प्राप्ति के लिए ही उम्र भर प्रयत्न करता रहता है परन्तु सुख फिर भी प्राप्त नहीं होता। सुख न प्राप्ति का कारण क्या है ? सतगुरु इस प्रश्न का उत्तर गुरबाणी में बख्शिश करते हैं कि मनुष्य सुख देने वाले स्रोत प्रभु से टूटकर, प्रभु से तोड़ने वाली वस्तुओं में से सुख ढूंढता है जैसे मनुष्य बहुत सारा धन एकत्रित करके सुख की इच्छा करता है। मनुष्य आंखों से सुन्दर दृश्य तथा तस्वीरें देखकर सन्तुष्टि ढूंढता है। कई मनुष्य राज्य की प्राप्ति में से सुख ढूंढते हैं। साहिबों के फ़रमान अनुसार इन वस्तुओं में से सुख तो क्या प्राप्त होना है बल्कि **"दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ॥"** की सच्चाई साकार होती है।

श्री गुरु अर्जुन देव जी का फ़रमान है

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे॥
सुखु नाहीं पेखे निरति नाटे॥
सुखु नाही बहुदेस कमाए॥
सरब सुखा हरि हरि गुण गाए॥

भैरउ महला ५ (पृष्ठ ११४७)

सुख मिलता है हरि के गुण गाने से, सुख मिलता है, श्री गुरु अर्जुन देव जी के वचनों को कमाने से, वे वचन हैं–

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ
कलि कलेस तन माहि मिटावउ॥

सुखमनी २६२

सुखों की प्राप्ति होती है सतगुरु जी के तत्त[१] वचनों को कमाने से, तत्त वचन हैं–

सोधत सोधत सोधि ततु वीचारिआ
नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ॥

महला ५ राम सूही ७६१

१. तत्तवचन–सच्चाई और यथार्थ से भरे हुए वचन

प्रभु का नाम जपने से लोक-परलोक की बढ़ाई, आजीवन आनन्द, मनवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। सतगुरु अमरदास जी का फरमान है-

मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ॥
सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछे सोई फल पाइ॥

आसा महला ३ (पृष्ठ ३६३)

परमेश्वर का नाम जपने से जहां सभी सुख प्राप्त होते हैं तथा मुँह मांगी मुरादें मिल जाती हैं वहीं आत्मिक शान्ति, प्रसन्नता, आजीवन आनन्द की दात सोये हुए ही प्राप्त हो जाती हैं। नाम जपने से सबसे बड़ी बख्शिश यह होती है कि हमारे मन पर जो जन्म-जन्मांतरों के पाप-संस्कारों की मलिनता लगी हुई है, जिसके बारे में श्री गुरु अमरदास जी ने सोरठ की वार में संकेत किया है।

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु॥
खनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु॥

सलोक म: ३ (पृष्ठ ६५१)

नाम जप के प्रभाव से यह मलिनता भी समाप्त हो जाती है तथा मन अपने वास्तविक रूप में निखर जाता है तथा नाम का हृदय में निवास हो जाता है।

प्रभका सिमरनि मन की मलु जाइ॥
अम्रित नामु रिद माहि समाइ॥

सुखमनी म: ५ (पृष्ठ २६३)

नाम मन की कैसे मैल उतारता है ? जैसे शरीर के अंग मिट्टी से भर जायें, कपड़े गन्दे हो जायें हम उनको साबुन लगाकर पानी में घोलकर साफ-सुथरे कर लेते हैं वैसे प्रभु प्यार में भीगकर जपा नाम बुद्धि को उज्ज्वल करता है।

भरीए हथु पैरु तनु देह॥ पाणी धोतै उतरस खेह॥
मूत पलीती कपड़ होइ॥ दे साबूण लईए ओहु धोइ॥
भरीए मति पापा कै संगि ओह धोपै नावै के रंगि॥

जपुजी पृष्ठ ४

कई बार हमारे मन में एक सन्देह बना रहता है, कि शायद नाम जपने का कार्य करने के लिए दुनियावी काम-काज छोड़ने पड़ेंगे तथा कहीं एकान्तवास में

ठिकाना बनाना पड़ेगा। फिर संसार कैसे चलेगा ? गुरमति में कहीं भी संसार को त्यागने की अथवा काम-काज को छोड़ने की शिक्षा नहीं दी बल्कि संसार की सभी ज़िम्मेदारियों को बड़ी लगन से निभाते हुए, हाथों-पैरों से किरत करनी है तथा रसना तथा मन से नाम जपना है जैसे भक्त कबीर जी करते हैं।

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि॥

सलोक कबीर महला (पृष्ठ १३७५)

की जुगत को अपने जीवन में अपनाना है।

एक ही समय दो कर्म कैसे करने हैं ? बाबा नामदेव जी ने ही रामकली राग में दुनियावी पांच उदाहरणें देकर इसी मन से संसार के कार-विहार करने की तथा उसी मन से प्रभु सिमरन करने की जुगत प्रदान की है। जैसे कि एक मन दुनिया के दो-दो कार्य प्रतिदिन ही करता है वैसे काम-काज करते **"ऊठत बैठत सोवत धिआईए। मारगि चलत हरे हरि गाईऐ।। आसा महला ५ (पृष्ठ ३८६)"** की कार करनी है। बाबा नामदेव जी का फ़रमान पढ़कर स्पष्ट हो जायेगा।

आनीले[१] कागद काटीले गुडी[२] आकास मधे भरमी अले॥
पंच[३] जना सिउ बात[४] बतऊआ चीत सु डोरी राखीअले॥
मनु राम नामा बेधी अलै॥ जैसे कनिक[५] कला चित माडी अले॥
आनीले कुभु[६] भराईले ऊदक[७] राज कुआरि[८] पुंरदरीए॥
हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राख अीले॥
मंदरु[९] एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाड़ीअलै॥
पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सु बछरा राखीअले॥३॥
कहत नाम देउ सुनहु तिलोचन बालक पालन पउढीअले[१०]॥
अंतरि बाहरि काज विरुधी[११] चीतु सु बारिक राखीअले॥

(बाकी नाम देउ जी)

---

१. लाया हुआ २. पतंग ३. मित्रों के साथ ४. बातें ५. सुनार ६. घड़ा, कुंभ ७. जल ८. राज कुमारी ९. दस द्वारों वाला घर १०. पालने में डालती है ११. काम में मग्न।

नाम जपते-जपते जिनको नाम का रस प्राप्त हो जाता है उनकी अन्य रसों की ओर दृष्टि हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है। वे तो संसार को पुकार-पुकार कर कह देते हैं। **राम रसु पीआ रे॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर॥1॥ रहाओ॥ गउड़ी कबीर जी (पृष्ठ 337)**

नाम का रस प्राप्त होते ही संसार के सभी रस सहित नशों के गुरमुख को कभी अच्छे नहीं लगते। इन सरूर देने वाले मादक नशों को वह तुच्छ जानता है तथा बाबा कबीर जी की भान्ति कह देता है।

उह रसु पीआ इह रस नहीं भावा॥ वह गुरु प्यारा तो **"राम रसाइणि जो रत्ते नानक सच अमली"** के रंग में रंगा होता है।

नाम का नशा कहीं बाहर से माया खर्च करके प्राप्त नहीं होता। नाम की दात तो गुरु को स्वयं समर्पित करके **"तनु मनु धनु सभु सउपि गुरु को हुकमि मनिऐ पाईए"** के धारणी बनकर प्राप्त की जा सकती हैं। इसलिए ऐसे अमूल्य नाम के रस को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हों तथा थोड़ी देर के लिए लोक-परलोक को बिगाड़ने वाले तन तथा धन का नाश करने वाले नशों से हमेशा के लिए परहेज़ करके अपना लोक सुखी परलोक सुविधापूर्ण बनायें। गुरु भला करेगा। भूल चूक क्षमा।

वाहेगुरु जी का खालसा॥

वाहेगुरु जी की फतेह॥

गुरुद्वारा रामपुर खेड़ा

गढ़दीवाला (होशियारपुर)

द्वारा

प्रकाशित पुस्तक सूची

1. से किनेहिआ ?	(पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी)
2. शब्द गुरु पीरा	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
3. गुरु ग्रंथ साहिब दर्शन	(पंजाबी, हिन्दी)
4. गुरुमति के पांधी	(पंजाबी)
5. नाम क्या है ?	(पंजाबी)
6. आत्मा क्या है ?	(पंजाबी)
7. रागमाला मंडन प्रबोध	(पंजाबी)
8. श्री गुरु अर्जुन देव जी की चौथी शहीदी शताब्दी	(पंजाबी)
9. मनुष्यता के दुश्मन नशे	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
10. प्रभु बख़्शिश केश	(पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी)
11. सामाजिक कुरीतियाँ	(पंजाबी)
12. हमारा विरसा और स्वै-पड़चौल	(पंजाबी)
13. जैसी संगति तैसी रंगत	(पंजाबी)
14. कॉस्मिक डिविनिटी ऑफ आदि गुरु ग्रंथ साहिब	(अंग्रेज़ी)
15. मनुखा जन्म और गुरु की महानता	(पंजाबी)